



आमन लेखनी

समय से पहले मैच्योर होते बच्चे.....

ऐसे खत्म हो जाएंगी आपकी सारी बाधाएं.....



वर्ष : 10 अंक : 270

लखनऊ, 11 सितम्बर, बुधवार 2024

पृष्ठ : 08

मूल्य : 2.00 रुपए

यूपी बनेगा देश का फूड बास्केट

योगी सरकार लगातार कर रही उत्पादन बढ़ाने का प्रयास

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को शुरू से मंशा रही है कि उत्तर प्रदेश देश का रूफूड बास्केट बनने में इस मंशा के पीछे उनके ठोस तर्क हैं। मसलन इंडो गेनेटिक बेल्ट की सबसे उर्वर भूमि, अलग अलग फसलों और फलों की खेती के लिए नौ तरह की कृषि जलवायु, वर्ष पर्यन्त पानी की उपलब्धता वाली गंगा, यमुना, सरयू जैसी नदियां, सर्वाधिक आबादी के नाति प्रचुर मात्रा में श्रम और बाजार की उपलब्धता आदि।

योगी सरकार लगातार कर रही उत्पादन बढ़ाने का प्रयास

विभिन्न योजनाओं के जरिए योगी सरकार लगातार फसलों की उपज बढ़ाने का प्रयास कर रही है। इसके नतीजे भी निकले हैं। पर राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर अलग अलग फसलों के उत्पादन पर गौर करें तो अब भी उपज बढ़ाने की बहुत संभावना है।



सरकार अब इस पर ही फोकस कर रही है। यूपी एग्रीज जैसी महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के केंद्र में भी उपज बढ़ाने को मुख्य घटक माना गया है।

जिलेवार प्रमुख फसलों के अधिकतम और न्यूनतम उत्पादन के पैप को पाटने का चला रहा कार्य

करीब दो साल पहले ही सरकार ने जिलेवार और फसलवार अधिकतम और न्यूनतम उत्पादकता के आंकड़े निकलवाए थे। इसका मकसद यह जानना था कि किन वजहों से किसी

फसल के अधिकतम और न्यूनतम उत्पादन में इतना अंतर है इस अंतर को पाटने के लिए न्यूनतम उत्पादन वाले जिलों में संबंधित फसल का उत्पादन बढ़ाने के लिए क्या किया जाना चाहिए।

यूपी एग्रीज में अब कम उत्पादन वाले बुंदेलखंड और पूर्वांचल पर फोकस

अब यही कवायद एक बार फिर योगी सरकार विश्व बैंक की मदद से यूपी एग्रीज (उत्तर प्रदेश: कृषि एवम

ग्रामीण उद्यमिता सुदृढ़ीकरण कार्यक्रम) के जरिए अधिक संसाधनों के साथ व्यापक इलाके में समयबद्ध और नियोजित तरीके से जा रही है। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश करीब 24% उत्पादन के साथ कुल कृषि उत्पादन में देश में नंबर एक है। रबी की प्रमुख फसल गेहूँ के मामले में यह नंबर एक (31%) तो खरीफ की प्रमुख फसल धान के उत्पादन में इसका देश में दूसरा (15%) है।

सर्वाधिक उत्पादन वाले राज्यों की तुलना में यूपी

बावजूद इसके कुछ फसलों को छोड़ दें तो इनका प्रति हेक्टेयर उत्पादन प्रति कुंतल राष्ट्रीय एवरेज से कम है। प्रति हेक्टेयर, प्रति कुंतल सर्वाधिक उत्पादन लेने वाले राज्यों की तुलना में तो कम है ही। वैश्विक स्तर के अधिकतम उत्पादन से तो कोई तुलना ही नहीं है।

उदाहरण के तौर पर चावल, गेहूँ, बाजरा, ज्वार और चना को छोड़ दें तो

बाकी प्रमुख फसलों में उत्तर प्रदेश सर्वाधिक उत्पादन करने वाले राज्यों में पीछे है। मसलन उत्तर प्रदेश में प्रति हेक्टेयर चावल की उत्पादकता 27.59 कुंतल है तो पंजाब की उत्पादकता 43.66 कुंतल। इसी तरह यूपी में गेहूँ का उत्पादन 36.04 पंजाब में 48.62, ज्वार 15.78 आंध्र प्रदेश 30.70, बाजरा 22.21 हरियाणा 23.72, मक्का 23.31 तमिलनाडु 68.20, उर्दू 4.98 महाराष्ट्र 5.68, मूंग 3.58 महाराष्ट्र 5.55, तिल 2.26 पश्चिम बंगाल 9.74, चना, 13.76, गुजरात 15.68, अरहर 9.88 झारखंड 11.38, मसूर 9.88 मध्य प्रदेश 11.39, दलहन 10.79 गुजरात 12.75, राई सरसो 14.12, हरियाणा 22.17, तिलहन 10.54 तमिलनाडु 20.43 प्रति हेक्टेयर कुंतल। इनका उत्पादन बढ़ाने के लिए यूपी एग्रीज से पूर्वांचल और बुंदेलखंड के उन जिलों को चुना है, जिनका उत्पादन अपेक्षाकृत कम है।

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, लोकसभा में मेरा प्रतिपक्ष और कांग्रेस नेता राहुल गांधी का तीन दिवसीय अमेरिका दौरा जारी है। इस दौरे के दौरान राहुल गांधी मंगलवार को वाशिंगटन डीसी में स्थित जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी में छात्रों के साथ संवाद करने पहुंचे। इस दौरान बीजेपी और आरएसएस पर उन्होंने जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि चुनाव से पहले इस बात पर चर्चा होती थी कि संस्थाओं पर कब्जा किया गया है। आरएसएस ने शिक्षा प्रणाली, मीडिया, जांच एजेंसियों पर कब्जा कर लिया है।

हमारे बैंक खातों को बंद किया

राहुल गांधी ने कहा कि गरीब भारत और उत्पीड़ित भारत ये समझ चुका है कि संविधान के खत्म होने पर देश खत्म हो जाएगा। गरीब इसे गहराई से समझ चुके हैं। गरीब जानता है कि ये लड़ाई संविधान की रक्षा करने वाली और इसे नष्ट करने वालों के बीच लड़ी



हुई है। आज के समय में जाति जनगणना का मुद्दा भी बड़ा है। सब कुछ साथ में आया। अगर चुनाव निष्पक्ष होते तो बीजेपी 246 सीटों के करीब होती। उनके पास आर्थिक लाभ भी था जबकि हमारे खाते सोल कर चुके थे।

निर्वाचन आयोग पर साधा निशाना

निर्वाचन आयोग पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि उनकी निष्पक्षताओं को ही चुनाव आयोग ने पूरा किया। चुनाव अभियान ऐसा था कि मोदी देशभर में अपना प्रचार कर सके। ये पूर्ण तरीके से एक नियंत्रित चुनाव था।

मौसम अधिकतम तापमान 43.0 न्यूनतम तापमान 29.0

बाजार सोना 7,177/9 चांदी 96/9

संसेक्स 81,332.72 निफ्टी 24,834.85

संक्षिप्त समाचार
मणिपुर में गलती से मैतेई-कुकी बफर जोन पार करने पर पूर्व सैनिक की हत्या
एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, भारत की सेना के एक पूर्व सैनिक की रविवार देर रात मणिपुर के इफाल पश्चिम जिले के सेकमाई गांव में मैतेई और कुकी क्षेत्रों के बीच बफर जोन को गलती से पार करने के बाद हत्या कर दी गई, अधिकारियों ने बताया। सैनिक का शव आज सुबह अधिकारियों को मिला, जिसको पहचान कागपोकपी जिले के मोटबंग निवासी लिमखोलाल माटे के रूप में हुई है। प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार, असम रेंजमेंट के पूर्व हवलदार माटे कल रात गलती से बफर जोन में चले गए थे और बाद में उन्हें सेकमाई के मैतेई-बहुल क्षेत्र में पीट-पीटकर मार डाला गया। पूर्व सैनिक के बेटे थांगमिनलुन माटे द्वारा दर्ज कराई गई पुलिस शिकायत के अनुसार, लिमखोलाल माटे को हाईवेयर आइटम खरीदते समय अगवा कर लिया गया था। अगले दिन उनका शव फुमलो क्षेत्र में मिला। पूर्व सैनिक के बेटे ने अपनी शिकायत में कहा, असम रेंजमेंट के भूतपूर्व सैनिक मेरे पिता लिमखोलाल माटे को संधि अरमबाई टेंगोल/मोतेई उग्रवादियों ने 8 सितंबर को शाम करीब 5 बजे उस समय अगवा कर लिया, जब वे शांतिपुर, कंगलाटोंगबी में हाईवेयर सामान खरीदने जा रहे थे। तब से वे घर नहीं लौटे। थांगमिनलुन ने कहा कि उन्हें सोशल मीडिया के माध्यम से अपने पिता की मौत के बारे में पता चला और वे अधिकारियों द्वारा शव सौंप जाने का इंतजार कर रहे थे, जिसे फिलहाल इफाल के मुर्दाघर में रखा गया है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, कंगपोकपी जिले के मोटबंग के रहने वाले लिमखोलाल माटे का शव सेकमाई इलाके में खून से लथपथ मिला।

जनजातीय संस्कृति और सम्मान का रक्षण आवश्यक- प्रदीप जोशी

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, आज झारखंड स्थित जनजातीय विद्यालय दून संस्कृति स्कूल में रा स्व संघ के अखिल भारतीयक सह प्रचार प्रमुख श्री प्रदीप जोशी ने उत्तराखण्ड तथा उत्तरपूर्वांचल के जनजातीय बच्चों के साथ वातालाप किया और फलदार वृक्ष का रोपण भी किया। उनका स्वागत पूर्व सांसद तरुण विजय, सीईओ मदन कोटारी, प्रधानाचार्य अंजलि राय, निदेशक ऋत्विक् विजय ने

किया। विद्यालय में धारचूला से लेकर अरुणाचल मणिपुर मिजोरम आदि उत्तरपूर्वांचल के छात्र निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। सघ के वरिष्ठ अधिकारी श्री प्रदीप जोशी ने अध्यापकों तथा छात्रों को संबोधित किया और कहा वर्तमान परिदृश्य में जनजातीय समाज अनेक खतरों का सामना कर रहा है। उनकी रक्षा हेतु यह आवश्यक है कि उनके सांस्कृतिक एवं परंपरागत धरोहर की संरक्षा की जाये तथा उनको श्रेष्ठ आधुनिक शिक्षा से सशक्त किया जाये।

सुप्रीम कोर्ट की डेडलाइन खत्म, निर्देश के बावजूद काम पर नहीं लौटे डॉक्टर, रखी 5 शर्तें

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, 9 अगस्त से आरजी कर अस्पताल की पीड़िता के लिए न्याय की मांग कर रहे पश्चिम बंगाल भर के सरकारी अस्पतालों के जूनियर डॉक्टरों ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा एक दिन पहले निर्धारित शाम 5 बजे को समय सीमा पार करने के बाद भी मंगलवार को काम बंद रखा। इसके बजाय, हड़ताली डॉक्टरों ने मंगलवार को आरजी कर अस्पताल से स्वास्थ्य भवन के दरवाजे तक विरोध प्रदर्शन करके अपना विरोध बढ़ा दिया। पुलिस

द्वारा रोके जाने के बाद उन्होंने साल्ट लेक में सौंदर्य भवन के बाहर रैली निकाली और धरना शुरू कर दिया। एक प्रदर्शनकारी डॉक्टर ने कहा कि हम सुप्रीम कोर्ट के आदेश से निराश हैं। हमने राज्य सरकार को अपनी मांगें पूरी करने के लिए मंगलवार शाम पांच बजे तक की समयसीमा दी है। जब तक सरकार हमारी मांगें पूरी नहीं करती तब तक काम बंद जारी रहेगा। इसलिए, काम बंद रहेगा या नहीं, यह सरकार पर निर्भर करता है। शीर्ष अदालत ने सोमवार को हड़ताली जूनियर डॉक्टरों को राज्य सरकार की



प्रतिकूल कार्रवाई से बचने के लिए मंगलवार शाम 5 बजे तक अपना काम शुरू करने का निर्देश दिया। अदालत ने

यह निर्देश तब दिया जब पश्चिम बंगाल सरकार ने उसे आश्वासन दिया कि अगर प्रदर्शनकारी डॉक्टर काम पर

लौटेंगे तो उनके खिलाफ दंडात्मक तबादलों सहित कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल बलात्कार और हत्या मामले की सुनवाई कर रहे भारत के मुख्य न्यायाधीश की खंडपीठ द्वारा आंदोलनकारियों से मंगलवार शाम 5 बजे तक काम फिर से शुरू करने का आग्रह करने के तुरंत बाद पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी सोमवार को जूनियर डॉक्टरों से ड्यूटी पर लौटने का अनुरोध किया।

कानपुर ट्रेन हादसे की जांच में आतंकवाद निरोधी एजेंसी भी शामिल

100 से अधिक लोगों से पूछताछ

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश के कानपुर में भिवानी-प्रयागराज कालिंदी एक्सप्रेस को पटरी से उतारने की कोशिश के सिलसिले में कुल 12 लोगों को हिरासत में लिया गया है और 100 से अधिक लोगों से पूछताछ की गई है। मंगलवार को राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की एक टीम भी जांच में शामिल हुई। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज से हरियाणा के भिवानी जा रही कालिंदी एक्सप्रेस रविवार को कानपुर



के शिवराजपुर में पटरी पर रखे एलपीजी सिलेंडर से टकरा गई और फिर रुक गई। इस घटना में कोई यात्री घायल नहीं हुआ। ट्रेन के पायलट ने पटरियों पर एलपीजी सिलेंडर और

अन्य संधिध सामान देखकर ब्रेक लगाए। हालांकि, ट्रेन समय पर नहीं रुकी और सिलेंडर से टकरा गई। पुलिस ने कहा कि बदमाशों ने सिलेंडर रखने के बाद संभवतः पटरियों के पास

झाड़ियों में छिप गए। कानपुर पुलिस ने सिलेंडर के खरीदार का पता लगाने के लिए तीन गैस एजेंसियों से पूछताछ की। वे खरीदार का पता लगाने के लिए सिलेंडर पर सीरियल नंबर का पता लगाने की भी कोशिश कर रहे हैं। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था) हरिश चंद्र ने बताया कि घटनास्थल पर 4-5 ग्राम विस्फोटक पाउडर, पेट्रोल की एक बोतल, एक बाली और माचिस की डिब्बियां भी मिलीं। उन्होंने कहा, इंसि निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी कि साजिश के पीछे आतंकवादी समूह हैं या नहीं, क्योंकि पुलिस किसी भी संभावना से इनकार नहीं कर सकती। इस बीच, रविवार को राजस्थान के अजमेर में

एक मालगाड़ी को पटरी से उतारने की एक और कोशिश नाकाम कर दी गई। यह घटना फुलेरा-अहमदाबाद खंड पर पश्चिमी सर्मापित मालगाड़ी गलियारों के संधाधना और बांगड स्टेशनों के बीच हुई। ट्रेन ने टूक पर 70 किलोग्राम वजन की दो सीमेंट ब्लॉकों को टक्कर मार दी। हालांकि, ट्रेन बिना किसी नुकसान के अपनी यात्रा जारी रखने में सफल रही। ये दो नाकाम कोशिशें एक महीने से भी कम समय बाद हुई हैं, जब अहमदाबाद जाने वाली साबरमती एक्सप्रेस पैसेंजर ट्रेन के 20 डिब्बे कानपुर के गोविंदपुरी स्टेशन के पास पटरी पर रखी एक वस्तु से टकराने के बाद पटरी से उतर गए थे।

जो लोग 400 पार का दावा करते थे, वे 240 पर सिमट गए : तेजस्वी

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

समस्तीपुर (बिहार)। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता तेजस्वी यादव ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के इस आरोप का समर्थन किया कि हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव अगर स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से हुए होते तो भाजपा 240 सीट तक भी नहीं पहुंच पाती। लोकसभा में विपक्ष के नेता फिलहाल अमेरिका की यात्रा पर हैं और वहां सोमवार को प्रतिष्ठित जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी में उन्होंने दावा किया कि अगर निष्पक्ष चुनाव होता तो भाजपा 240 सीटों के आसपास भी नहीं आती।

बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री यादव से गांधी के इस आरोप के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, यह कोई रहस्य नहीं है कि भाजपा के विरोधियों पर केंद्रीय जांच एजेंसियों को खुला छोड़ दिया जाता है। दूसरी ओर, जैसा कि हमने महाराष्ट्र में देखा है, केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी के साथ गठबंधन करने से पिछले सभी पाप धुल जाते हैं। यादव का इशारा महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अनंत पवार को भी सझना और जांचना चाहते हैं। वे एक संस्थागत सर्वेक्षण, एक सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण और एक जनगणना है। उन्होंने कहा कि जब भारत एक निष्पक्ष देश होगा तो कांग्रेस पार्टी आरक्षण खत्म करने के बारे में सोचेगी, जो अभी नहीं है। गांधी ने आरक्षण और यह कब तक जारी रहेगा सवाल के जवाब में विश्वविद्यालय में छात्रों से कहा कि जब भारत एक निष्पक्ष स्थान पर होगा तो हम आरक्षण खत्म करने के बारे में सोचेंगे। फिलहाल देश में ऐसी स्थितियां नहीं हैं।

'मणिपुर में शांति के लिए तुरंत आवश्यक कदम उठाएं प्रधानमंत्री मोदी अशोक गहलोत ने की केंद्र सरकार से मांग

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, मणिपुर सरकार ने छात्रों के विरोध प्रदर्शन के मद्देनजर इम्फाल पूर्व और इम्फाल पश्चिम जिलों में कर्फ्यू लगा दिया है और थौबल में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) की धारा 163 (2) के तहत निषेधाज्ञा लागू की है। छात्र आंदोलन के बीच पूरे मणिपुर में पांच दिनों के लिए इंटरनेट सेवा निलंबित की गयी। गृह विभाग की अधिसूचना के अनुसार यह जानकारी दी है। इसके अलावा शीर्ष पुलिस अधिकारी ने कहा कि मणिपुर में ड्रोन, हाईटेक मिसाइल हमले के बाद अत्याधुनिक रिकेट के अवेशष मिले। कांग्रेस मणिपुर को लेकर काफी ज्यादा सरकार की अलोचना कर रही है। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक



गहलोत ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत केंद्र सरकार पर मणिपुर में हो रही हिंसा पर ध्यान नहीं देने का आरोप लगाते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से पूर्णतः राज्य में शांति स्थापित करने के लिए तुरंत आवश्यक कदम उठाने की मंगलवार को अपील की। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता गहलोत ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा कि मणिपुर में राज्यपाल आवास एवं मुख्यमंत्री के घर जैसे सुरक्षित स्थानों तक पर लगातार हमले हो रहे हैं लेकिन

केंद्र सरकार इस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दे रही है। उन्होंने दावा किया कि पूर्वांचली राज्य में अत्याधुनिक हथियारों एवं ड्रोन का इस्तेमाल कर आम लोगों पर हमले किए जा रहे हैं। गहलोत ने कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने असम में शांति स्थापित करने के लिए राज्य में कांग्रेस पार्टी की सरकार तक की कुबानी देने में संकोच नहीं किया था जिसके कारण आज तक वहां शांति का दौर स्थापित है। कांग्रेस नेता ने कहा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से (लोकसभा में) नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सहित तमाम विपक्षी दल मणिपुर का दौरा करने की मांग कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी को मणिपुर में शांति स्थापना के लिए अब आवश्यक कदम उठाने में देरी नहीं करनी चाहिए एवं मणिपुर का दौरा करना चाहिए।

राहुल गांधी के आरक्षण खत्म करने वाले बयान पर मड़की मायावती

संविधान बचाने का नाटक करने वाली पार्टी से लोगों को किया सजग

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, बहुजन समाज पार्टी की सुप्रिमी मायावती ने राहुल गांधी के आरक्षण को लेकर दिए ताजा बयान पर निशाना साधा है। मायावती ने सिलसिलेवार ट्वीट के जरिए कांग्रेस की मंशा पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र में काफी लम्बे समय तक सत्ता में रहते हुए कांग्रेस पार्टी की सरकार ने ओबीसी आरक्षण को लागू नहीं किया और ना ही देश में जातीय जनगणना कराने वाली यह पार्टी अब इसकी आड़ में सत्ता में आने के सपने देख रही है। इनके इस नाटक से सचेत रहें जो आगे कभी भी जातीय जनगणना नहीं करा पाएगी। अब कांग्रेस पार्टी के सर्वेसर्वा श्री राहुल गांधी के इस नाटक से भी सतक रहें जिसमें उन्होंने विदेश में यह कहा है कि भारत जब बेहतर स्थिति में होगा तो हम SC, ST, OBC का आरक्षण खत्म कर देंगे। इससे स्पष्ट है कि कांग्रेस



वर्षों से इनके आरक्षण को खत्म करने के पडयंत्र में लगी है। मायावती ने कहा कि इन वर्गों के लोग कांग्रेसी नेता श्री राहुल गांधी के दिए गए इस घातक बयान से सावधान रहें, क्योंकि यह पार्टी केन्द्र की सत्ता में आते ही, अपने इस बयान की आड़ में इनका आरक्षण जरूर खत्म कर देंगे। ये लोग संविधान व आरक्षण बचाने का नाटक करने वाली इस पार्टी से जरूर सजग रहें। जबकि सच्चाई में

कांग्रेस शुरू से ही आरक्षण-विरोधी सोच की रही है। केंद्र में रही इनकी सरकार में जब इनका आरक्षण का कोटा पूरा नहीं किया गया तब इस पार्टी से इनको इन्साफ ना मिलने की वजह से ही बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर ने कानून मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। लोग सावध रहें। कुल मिलाकर, जब तक देश में जातिवाद के समूल नष्ट होने तक आरक्षण की सही संवैधानिक व्यवस्था जारी रहना जरूरी। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने जातीय सहमति की वकालत की और कहा कि कांग्रेस पार्टी निचली जातियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति जानना चाहती है। जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय में जाति जनगणना की

आवश्यकता को समझते हुए राहुल ने कहा किहम इन जातियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को समझना चाहते हैं। तीसरा घटक, जो मुझे लगता है कि बहुत महत्वपूर्ण है, वह यह है कि हम भारत के संस्थानों-मीडिया, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा-स्वामित्व, इन सेवाओं को प्रदान करने वाली संरचना और इन संस्थानों में भारत की भागीदारी को भी समझना और जांचना चाहते हैं। ये एक संस्थागत सर्वेक्षण, एक सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण और एक जनगणना है। उन्होंने कहा कि जब भारत एक निष्पक्ष देश होगा तो कांग्रेस पार्टी आरक्षण खत्म करने के बारे में सोचेगी, जो अभी नहीं है। गांधी ने आरक्षण और यह कब तक जारी रहेगा सवाल के जवाब में विश्वविद्यालय में छात्रों से कहा कि जब भारत एक निष्पक्ष स्थान पर होगा तो हम आरक्षण खत्म करने के बारे में सोचेंगे। फिलहाल देश में ऐसी स्थितियां नहीं हैं।

संक्षेप धोखाधड़ी करने वाले जालसाज भाई- बहन, गिरफ्तार

अमन लेखनी समाचार

मोहनलालगंज |मोहनलालगंज पुलिस ने जबरौली गांव में पूर्व में विक्रय की गयी जमीन दोबारा बेचकर धोखाधड़ी करने वाली सगे भाई-बहन को मंगलवार को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।इंस्पेक्टर आलोक राव ने बताया मंगलवार को जालसाज शिवरानी व उसके भाई हेमन्त कुमार निवासीगण भट्टी बरकतनगर थाना गोसाईंगंज को गिरफ्तार कर जालसाजी व धोखाधड़ी के दर्ज मुकदमे में जेल भेज दिया गया।

दो माह पहले फार्म हाउस में हुयी चोरी का खुलासा, एक चोर गिरफ्तार

अमन लेखनी समाचार

मोहनलालगंज |मोहनलालगंज पुलिस ने दो माह पहले भसण्डा के एक फार्म हाउस में हुयी चोरी का मंगलवार को खुलासा करते एक चोर को गिरफ्तार कर माल बरामद किया। पुलिस ने शातिर चोर को न्यायालय में पेश किया जहा से उसे जेल भेज दिया गया।इंस्पेक्टर आलोक राव ने बताया क्षेत्र के भसण्डा गांव के बाहर स्थित वीरेन्द्र यादव के फार्म हाउस में बने कमरे का ताला तोड़कर दो माह पहले चोर उसमें रखे लोहे के इंगल व तार चोरी कर ले गये थे।पीड़ित की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर चोरी की तलाश के लिये पुलिस टीम को लगाया गया था,मंगलवार को मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने फार्म हाउस में चोरी करने वाले चोर रामबाबू निवासी राधाकृष्णखड़ा थाना मोहनलालगंज को गिरफ्तार कर उसके पास से चोरी के तीन लोहे के एंगल व १70रुपए नगद बरामदहुये।

बेखौफ चोरों ने एयरपोर्ट पार्किंग से बाइक चोरी

अमन लेखनी समाचार

सरोजनीनगर, लखनऊ। सरोजनीनगर में सोमवार को बेखौफ चोरों ने एयरपोर्ट पार्किंग से एक स्लेंडर बाइक चोरी कर ली। जानकारी होने के बाद पीड़ित ने इसकी सूचना थाने पर दी। पुलिस सीसीटीवी कैमरे के जरिए चोर का पता लग रही है। सरोजनीनगर स्थित चिल्लावां में किराए पर रहने वाले संदीप कुमार के मुताबिक वह चौधरी चरण सिंह एयरपोर्ट पर एएसआईएल कंपनी में कार्यरत है। संदीप का कहना है कि सोमवार सुबह वह अपनी स्लेंडर प्लस बाइक (यूपी 32 एचई 300१9) से एयरपोर्ट पहुंचा और गाड़ी पार्किंग में खड़ी कर ड्यूटी करने चला गया। काफी देर बाद जब छुट्टी होने पर वापस पहुंचा तो बाइक पार्किंग से गायब मिली। बाद में आसपास सीसीटीवी कैमरे चेक किए गए तो उसमें एक युवक बाइक ले जाने नजर आया। इसके बाद इसकी सूचना सरोजनीनगर थाने पर दी गई। फिलहाल पुलिस तहरीर लेकर सीसीटीवी कैमरे के आधार पर चोर की तलाश कर रही है।

लखनऊ में अवैध प्लाटिंग पर चला बुलडोजर, नौ कॉमर्शियल निर्माण किए गए सील

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। एलडीए वीसी प्रथमेश कुमार के निर्देश पर शहर में अवैध प्लाटिंग व निर्माण के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के क्रम में मंगलवार को प्रवर्तन टीम ने बड़ी कार्यवाही की। इस दौरान बखशी का तालाब के ग्राम-भैंसामऊ में करीब आठ बीघा क्षेत्रफल में की जा रही अवैध प्लाटिंग को ध्वस्त किया गया साथ ही गोमती नगर और चिनहट क्षेत्र में कुल नौ अवैध व्यावसायिक निर्माण सील किये गए।

अनियोजित कॉलोनी विकसित हो रही थी

प्रवर्तन जोन-5 के जोनल अधिकारी रवि नंदन सिंह ने बताया कि

50 हजार युवाओं के बायोडाटा में प्रोफेशनल स्किल्स को जोड़ना मेरा लक्ष्य : डॉ. राजेश्वर सिंह

स्थापित कराए जाएंगे 100 रण बहादुर सिंह डिजिटल शिक्षा एवं युवा सशक्तिकरण केंद्र - डॉ. राजेश्वर सिंह

रण बहादुर सिंह डिजिटल शिक्षा एवं युवा सशक्तिकरण केंद्र बन रहे डिजिटल लिटरेसी, डिजिटल लाइवैरी और डिजिटल नौकरियों का उन्नत आधार

अमन लेखनी समाचार

सरोजनीनगर लखनऊ | सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा अपने पिता रण बहादुर सिंह की स्मृति में शुरू की गयी डिजिटल सशक्तिकरण केंद्रों की स्थापना की अभिननव पहल युवाओं को महत्वपूर्ण डिजिटल कौशल की प्री ट्रेनिंग प्रदान करने के साथ क्षेत्रवासियों को ई - गवर्नंस सुविधा का सहज लाभ भी उपलब्ध करावा रही है। सरोजनीनगर में विधायक द्वारा 100 रण बहादुर सिंह डिजिटल शिक्षा एवं युवा सशक्तिकरण केंद्रों की स्थापना के लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए सीएसआर फण्ड के माध्यम से सभी केंद्रों को 5-5 कंप्यूटर, इंटरनेट, फर्नीचर व अन्य

आवश्यक संसाधन प्रदान कर 6 केंद्रों की स्थापना कराई गयी जिनका सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। मंगलवार को विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने कल्ली पश्चिम में सातवें रण बहादुर सिंह डिजिटल शिक्षा एवं युवा सशक्तिकरण केंद्र का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए डॉ. सिंह ने कहा कि युवा देश का भविष्य हैं, जब भारत को आजादी दिलानी थी, तो चंद्रशेखर आजाद, मंगल पाण्डेय जैसे महान युवाओं ने देश के लिए बलिदान दिया। जब आजाद भारत को नव निर्माण की आवश्यकता थी, तो डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, डॉ. विक्रम साराभाई जैसे युवकों ने देश की नींव मजबूत की। जब उभरते भारत को विश्व की ताकत बनाना था तो सुंदर पिचाई (गूगल के सीईओ), नीरज चोपड़ा (भारत फेंक, ऑलिंपिक स्वर्ण पदक विजेता) जैसे युवाओं ने देश की कमान संभाली। अब भारत को वैश्विक शक्ति बनाना है, तो यह दायित्व आज के युवाओं का है। इसलिए, सरोजनीनगर के हर युवा को वह प्लेटफार्म, संसाधन, सहयोग, समर्थन उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे वे राष्ट्र निर्माण में आप अपना योगदान दे सकें।

सरोजनीनगर विधायक ने आगे जोड़ा कि आने वाला युग डिजिटल पाँवर का है, हम फैंक्स मशीन से इमेल पर आये, मोबाइल फोन से स्मार्टफोन पर आये, कंप्यूटर से लैपटॉप और आईपैड पर आये, आने वाले समय में रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बदलाव के वाहक है। इस लिए डिजिटल शिक्षा की दिशा में युवाओं को तैयार करना हमारा प्रमुख उत्तरदायित्व है और रण बहादुर सिंह डिजिटल शिक्षा एवं युवा सशक्तिकरण इस दिशा में बढ़ता मजबूत कदम है, इनकेंद्रों के माध्यम से 50 हजार बच्चों को डिजिटल शिक्षा का लाभ दिलाना है, उनके बायोडाटा में प्रोफेशनल स्किल्स को जोड़ना है, ताकि उन्हें रोजगार के अधिक से अधिक अवसर मिल सकें।

विधायक डॉ. सिंह आगे बताया अब इन केंद्रों पर डिजिटल लाइवैरी की सुविधा का ह्रसार भी किया जाएगा, इनमें एनसीईआरटी की किताबें, प्रतियोगी परीक्षाओं का स्टडी मटेरियल उपलब्ध होगा ताकि युवाओं को अपने सपनें पूरा करने में भी सहायता मिल सके। उन्होंने बताया अब तक 1500 से अधिक सिलार्इ, कढ़ाई मशीनें प्रदान कर सरोजनीनगर में 130 तारा शक्ति केंद्रों की स्थापना की जा चुकी है और 60

केंद्रों की स्थापना प्रक्रियाधीन है। ताराशक्ति केंद्रों से जुड़ी सरोजनीनगर परिवार की महिलाओं को आगामी प्रयागराज महाकुम्भ में 1 लाख इको फ्रेंडली बैग्स पहुंचा कर पर्यावरण संरक्षण अभियान को आगे बढ़ाना चाहिए, इसके लिए उन्हें हर संभव संसाधन उपलब्ध कराया जाएगा। बता दें कि डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा स्थापित इन केंद्रों पर युवाओं को डिजिटल टूल (एमएस वर्ड, एमएस एक्सेल, ओएस, टैली आदि) का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता हैं। साथ ही इन केंद्रों के माध्यम से स्थानीय नागरिकों के प्रथामंत्री नरेन्द्र मोदी एवं योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली सरकारों की जनकल्याणकारी योजनाओं जैसे पेंशन, सम्मान निधि, आयुष्मान कार्ड, राशन कार्ड, पीएम सुवर्ण फ्री बिजली योजना व आय प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र आदि का आवेदन को सुविधा भी मिलती है। इस दौरान पूर्व विधायक धीरेन्द्र बहादुर सिंह, सेंट्र इंचार्ज रंजना सिंह, पार्षद द्रौपदी रावत, मनोज रावत, हिमांशु अम्बेडकर, डॉ. रीना उपाध्याय, ललित रावत, युगुतिवावी, राम खलवान, तेज नारायण सिंह, शेर अली खान, शिव कुमार सिंह 'चच्चू' एवं अन्य भाजपा नेता मौजूद रहे।



सुनील बाथम दिलशाद अहमद सन्तोष बाथम आदि ने बताया कि प्रति वर्ष गणेश पण्डालों की संख्या बढ़ती जा रही है। करीब बारह वर्ष पूर्व सिसेंडी में प्रथम पण्डाल बुद्धेश्वर मन्दिर के पास लगने के बाद से हर वर्ष भक्तों व पण्डालों की संख्या बढ़ रही है साथ ही बढ़ती आस्था से गजानन भक्तों की आस्था।

सुरक्षाकर्मियों के साथ मरीज को देखने जाएंगे डॉक्टर

उत्तर प्रदेश में सुरक्षा की नई गाइडलाइन तैयार

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। प्रदेश के अस्पतालों व मेडिकल कॉलेजों में अब रात्रि में एक वार्ड से दूसरे वार्ड मरीज को देखने जा रहे डॉक्टर व पैरामेडिकल स्टाफ के साथ सुरक्षाकर्मियों भी होंगे, ताकि उनके साथ कोई दुर्घटना न हो सके। कोलकाता के आरजी कर अस्पताल में महिला चिकित्सक की हत्या के बाद अब उत्तर प्रदेश में सुरक्षा की नई गाइडलाइन तैयार की गई है। मंगलवार को मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह की ओर से इसे सख्ती के साथ लागू करने के निर्देश दिए गए हैं।

अस्पतालों में विभिन्न ब्लॉकों, छात्रावास भवनों व अस्पताल के अन्य क्षेत्रों में रात्रि में अनिवार्य रूप से सुरक्षाकर्मियों गरत करेंगे। अस्पताल के सभी प्रवेश व निकास बिंदुओं, रोगी के कमरों तक जाने वाले गलियारों तथा परिसर के अन्य प्रमुख स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। यही नहीं कंट्रोल रूम बनाकर 24 घंटे सीसीटीवी कैमरे की नजर से निगरानी

की जाएगी। यहां आने वाले लोगों की संख्या, बेड्स की संख्या व सुविधाओं के अनुरूप अस्पताल परिसर में सुरक्षा चौकियां स्थापित की जाएंगी।

पुलिस से संपर्क में रहेगा अस्पताल प्रशासन

वहीं, पास के पुलिस स्टेशन से अस्पताल प्रशासन पूरी तरह संपर्क में रहेगा और डायल 112 का भी उपयोग करेंगा। इमरजेंसी व आईसीयू जैसे क्षेत्रों में हिंसा को अधिक संभावना को देखते हुए यहां पर अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात किया जाएगा। प्रवेश व निकास द्वार पर चेकिंग की व्यवस्था होगी और अस्पताल परिसर में कोई भी हथियार नहीं ला सकेगा। वहीं अस्पताल सुरक्षा समिति व हिंसा रोकथाम समिति का गठन किया जाएगा। सरकारी अस्पतालों व मेडिकल कॉलेजों में बनाई जाने वाली इन समितियों में वरिष्ठ चिकित्सक व प्रशासनिक अधिकारी शामिल होंगे, ताकि उचित सुरक्षा उपायों की रणनीति बनाई जा सके और उसे लागू किया जा सके।

संदिग्ध परिस्थितियों में फांसी के फंदे से लटका मिला विवाहिता का शव



अमन लेखनी समाचार

निगोहां इन्नाव जनपद के एक गांव से ट्रेलर के यहा कपड़े सिलवाने की बात कहकर तीन दिन पहले घर से निकली विवाहिता का मंगलवार को निगोहां थाना क्षेत्र के शेखनखेड़ा गांव के बाहर एक पेड़ में रूपट्टे के सहारे शव लटकता मिला। ग्रामीणों की सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने विवाहिता के शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त कराने के प्रयास शुरू किये तो घटना स्थल वाले गांव में रहने वाले तेज नारायन ने मृतका की पहचान अपनी भतीजी सोनम निवासी हरिनामखेड़ा थाना असोहा जनपद उन्नाव के रूप में की। चाचा की सूचना के बाद उन्नाव से मौके पर पहुंचे परिजन बेटी सोनम का शव देख बिलख पड़े। परिजनों ने विवाहिता बेटी की गला कसकर हत्या करने के बाद शव को रूपट्टे के सहारे पेड़ से लटककाे जाने की आंशका जताई है।थाना प्रभारी अनुज कुमार तिवारी ने बताया मृतक विवाहित के शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर पीएम के लिये भेजा गया है, पीएम रिपोर्ट में मौत का कारण स्पष्ट होने के बाद आगे की कार्यवाही की जायेगी।

विधायक भाजपा नेता के कार्यालय पहुंचकर जन्मदिन की दी बधाई



अमन लेखनी समाचार

समर्थन और प्रेम ही मेरी सबसे बड़ी ताकत है। बंधरा, बंधरा क्षेत्र के कटी बगिया स्थित कार्यालय पर वरिष्ठ भाजपा नेता शिव शंकर सिंह शंकरी जी के जन्मदिन पर उनके समर्थकों और कार्यकर्ताओं ने उन्हें बधाई दिया, साथ में लंबी उम्र की कामना भी की। इस अवसर पर शंकरी सिंह ने अपने समर्थकों को संबोधित करते हुए कहा कि उनका समर्थन और प्रेम ही उनकी सबसे बड़ी ताकत है। सोशल मीडिया पर भी शंकरी सिंह के समर्थकों ने उन्हें जन्मदिन की बह चढ़कर शुभकामनाएं दीं। ऐसे में शंकरी सिंह ने अपने समर्थकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आपका

पुलिस की लापरवाही कहीं ग्रामीण पर न पड़ जाए भारी, जिम्मेदार मौन

अमन लेखनी समाचार

बंधरा। सरोजनी नगर के बंधरा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी गांवों में चोर घटना को अंजाम देने के लिए सक्रिय हैं। लगातार गांव में चोरी करने के फिगरक में दाव पेज आजात रहे हैं। लेकिन गांव के लोगों की सक्रियता के चलते चोर चोरी करने में नाकामयाब साबित हो रहे हैं। वहीं पुलिस की लापरवाही भी नजरआज नहीं की जा सकती है। क्षेत्रीय पुलिस न तो गस्त कर रही है और न ही गांव के लोगों की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर चिंतित है। पहरा भी गांव के लोग ही टोलिया बनावर लगातार दे रहे हैं। क्षेत्र के यूवा शाम होते ही सोने के बजाय चोरों से गांव बचाने को लेकर इधर-उधर घूम रहे हैं। लगातार जागते रहो जागते रहो की आवाज भी लगा रहे हैं। जिससे कि किसी प्रकार से गांव के अंदर कोई

चोर प्रवेश न कर पाए बावजूद इसके निर्भीक चोर कहीं ना कहीं अपना हाथ साफ ही कर दे रहे हैं। ग्रामीण बताते हैं कि सोमवार की रात लगभग 2:30 बजे गद्दी चुनौटी गांव के अंदर कुछ चोर दाखिल हुए। गांव के लोग जब तक उनके पास पहुंचते तब तक वह भागने में कामयाब रहे। नाम न छापने की शर्त पर लोगों ने बताया कि गांव के बाहर खेतों में कुछ आभूषण के खाली पैकेट भी मिले हैं। जिससे पता चलता है कि चोर कहीं से माल चुराकर लाए और खेतों में सोने व चांदी के आभूषण निकाल कर पैकेट वहाँ छोड़कर चले गए। इतना ही नहीं कुछ लोगों ने जानकारी दी की बंधरा थाने से चंद कदमों की दूरी पर गोल्डन सिटी में बने लोगों के घरों के ऊपर ड्रोन जैसा उपकरण उड़ रहा है। कई लोग इस ड्रोन कैमरे को देखकर भयभीत भी हो

पीएसआई-इंडिया बनी देश की पहली हैपिएस्ट प्लेस टू वर्क वाली स्वयंसेवी संस्था

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल-इंडिया (पीएसआई-इंडिया) को देश की पहली हैपिएस्ट प्लेस टू वर्क (काम करने के लिए सबसे सुखद स्थान) वाली प्रमाणित स्वयंसेवी संस्था बनने का गौरव हासिल हुआ है। हैपीनेस रिसर्च एकेडमी प्राइवेट लिमिटेड ने संस्था को यह प्रमाणपत्र प्रदान किया है। कर्मचारियों से बातचीत, फीडबैक और संतुष्टि की तकनीक के आधार पर यह उपलब्धि जुलाई 2024 से जुलाई 2025 के लिए हासिल की गयी है। यह प्रमाणपत्र कर्मचारी कल्याण और सकारात्मक कार्यस्थल संस्कृति के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह जानकारी पीएसआई-इंडिया के एकजैक्युटिव डायरेक्टर मुकेश कुमार शर्मा ने दी।

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। इजरायल व हमास के बीच छिड़े युद्ध के कारण क्षतिग्रस्त हुए भवनों को ठीक करने व घायलों को देखभाल के लिए 15 हजार श्रमिकों की जरूरत है। इजरायल ने एक बार फिर भारत से 10 हजार निर्माण श्रमिकों और घायलों की देखभाल के लिए पांच हजार कर्ताओं की आवश्यकता को पूरा करने के लिए सहयोग मांगा है। ऐसे में अब फिर कोशल टेस्ट के माध्यम से श्रमिकों का चयन किया जाना है। पिछली बार 16,832 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था और इसमें से 10,349 अभ्यर्थी चुने गए थे। उत्तर प्रदेश कोशल विकास मिशन की ओर से इजरायल में नौकरी करने के इच्छुक अभ्यर्थियों से ख्याल रखती है। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए बताया कि देश में अभी हाल ही में हुए लोकसभा चुनावों के दौरान संस्था ने अपने उन कर्मचारियों के मताधिकार का पूरा ख्याल रखा जो अपने मतदान स्थल से दूर अन्य जिलों में कार्यरत थे। संस्था ने उन कर्मचारियों को उनके मतदान वाले शहर में आने-जाने की व्यवस्था करते हुए मतदान दिवस के अवकाश के साथ एक अतिरिक्त दिन वहीं से कार्य करने की सुविधा भी प्रदान की और मतदान के लिए प्रेरित किया। सरकार के मतदान प्रतिशत बढ़ाने के प्रयासों में इस सहयोग का संस्था के कर्मचारियों ने दिल खोलकर तारीफ की। ज्ञात हो कि पीएसआई इंडिया मातृ-शिशु स्वास्थ्य, परिवार नियोजन, स्वच्छता, महिला सशक्तिकरण समेत विभिन्न क्षेत्रों में सहयोगी संस्था के रूप में कार्य कर रही है।

एक बार फिर इजरायल में नौकरी का मौका, दो लाख रुपये तक हर महीने सैलरी

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। इजरायल व हमास के बीच छिड़े युद्ध के कारण क्षतिग्रस्त हुए भवनों को ठीक करने व घायलों को देखभाल के लिए 15 हजार श्रमिकों की जरूरत है। इजरायल ने एक बार फिर भारत से 10 हजार निर्माण श्रमिकों और घायलों की देखभाल के लिए पांच हजार कर्ताओं की आवश्यकता को पूरा करने के लिए सहयोग मांगा है। ऐसे में अब फिर कोशल टेस्ट के माध्यम से श्रमिकों का चयन किया जाना है। पिछली बार 16,832 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था और इसमें से 10,349 अभ्यर्थी चुने गए थे। उत्तर प्रदेश कोशल विकास मिशन की ओर से इजरायल में नौकरी करने के इच्छुक अभ्यर्थियों से ख्याल रखती है। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए बताया कि देश में अभी हाल ही में हुए लोकसभा चुनावों के दौरान संस्था ने अपने उन कर्मचारियों के मताधिकार का पूरा ख्याल रखा जो अपने मतदान स्थल से दूर अन्य जिलों में कार्यरत थे। संस्था ने उन कर्मचारियों को उनके मतदान वाले शहर में आने-जाने की व्यवस्था करते हुए मतदान दिवस के अवकाश के साथ एक अतिरिक्त दिन वहीं से कार्य करने की सुविधा भी प्रदान की और मतदान के लिए प्रेरित किया। सरकार के मतदान प्रतिशत बढ़ाने के प्रयासों में इस सहयोग का संस्था के कर्मचारियों ने दिल खोलकर तारीफ की। ज्ञात हो कि पीएसआई इंडिया मातृ-शिशु स्वास्थ्य, परिवार नियोजन, स्वच्छता, महिला सशक्तिकरण समेत विभिन्न क्षेत्रों में सहयोगी संस्था के रूप में कार्य कर रही है।



संक्षेप

विद्युत ट्रांसफार्मर का पकड़ ठीक कर रहा लाइनमैन झुलसा

बांगरमऊ, उन्नाव। ट्रांसफार्मर में प्यूज सही कर रहा सविदा कर्मी लाइनमैन 11000 लाइन के करंट से गंभीर रूप से झुलस गया। जिससे जानकारी होने पर ग्रामीणों ने सीएचसी में भर्ती कराया जहां पर डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर कर दिया है। बांगरमऊ क्षेत्र के इस्माइलपुर आंबापारा के नयागांव गांव निवासी राहुल 27 पुत्र कल्लू बिजली विभाग में सविदा कर्मी कर्मी लाइनमैन है। इसी क्रम में वह आज मंगलवार शाम को बांगरमऊ संडीला मार्ग पर स्थित कार्जिपुर गांव में 11000 लाइन के पोल पर ऊपर चढ़कर बिना विभाग को सूचना दिए ट्रांसफार्मर का प्यूज बना रहा था। तभी अचानक बिजली आ गई और वह ईडि टेन्शन करंट की चपेट में आकर विद्युत पोल से नीचे गिर गया। जिससे वह गंभीर रूप से झुलस गया। जानकारी होने पर ग्रामीणों ने उसे अनान-फानन बांगरमऊ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया जहां पर डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर कर दिया है।

6 वर्षीय छात्र को शिक्षिका ने डंडों से जमकर पीटा

बांगरमऊ, उन्नाव। विद्यालय पढ़ने गए एक छात्र को अध्यापिका द्वारा डंडों से जमकर पीटा गया घर पहुंचने पर पिता ने पुत्र की हालत गंभीर देख पुलिस को शिकायती पत्र देकर कार्यवाही की मांग की है। बांगरमऊ के गांव रबडी निवासी अनिल कुमार पुत्र लीला ने गंजपुरादाबाद चौकी पुलिस को तहरीर देकर कहा है कि वह नितान्त ही गरीब व्यक्ति है जिससे तार बच्चों को मेहनत मजदूरी कर किसी तरह पाल रहा तथा उसकी पत्नी भी नहीं है। बीते 9 सितंबर को उसके दो बच्चे सुधांत व सुभाष नजदीकी प्राथमिक विद्यालय हारामन पुरवा पढ़ने गए हुए थे जहां की अध्यापिका ने 6 वर्षीय पुत्र सुधांत को डंडों से जमकर पीटाई की गई जिसके बाद वह किसी तरह घर पहुंचा तो बेहोस हो गया इस दसा में उसके बड़े पिता ने बच्चे का इलाज करवाया जिसके बाद ही बच्चे को होस आया शाम को वह मजदूरी कर घर लौटा तो घटना की जानकारी हुई तथा पिता ने चौकी पुलिस को शिकायती पत्र देकर अध्यापिका को नामित कर कार्यवाही की मांग की है।

महिला के साथ युवक ने की मारपीट, छीना मंगलसूत्र

शुकलागंज, उन्नाव। गजिया खेड़ा निवासी कोमल ने पुलिस को बताया कि सोमवार को जब वह किसी कारवा से जा रही थी, तभी रास्ते में गांव के ही एक युवक ने उसे रोक लिया और गाली-गलौज करने लगा। विरोध करने पर युवक ने उसे मारपीट कर गले में पड़ा मंगलसूत्र छीन लिया। महिला ने कहा कि मारपीट के दौरान, उसके जेठ सौतेने बचाव को कोशिश की, लेकिन युवक ने डंडा मारकर उसका सिर फोड़ दिया। कोमल ने बताया कि इससे पहले भी युवक ने तीन हजार रुपये न देने के कारण गाली-गलौज और मारपीट की थी। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तहरीर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इस घटना ने क्षेत्र में सुरक्षा को लेकर चिंता पैदा कर दी है, और स्थानीय लोगों ने पुलिस से उचित कार्रवाई की उम्मीद जताई है।

जागरण देखने गए युवक को दबंगों ने जमकर पीटा

अमन लेखनी समाचार

शुकलागंज, उन्नाव। गंगाघाट कोतवाली क्षेत्र के शक्तिनगर में एक युवक को मध्य रात्रि जागरण के दौरान लाठी, डंडे और तलवार से पीटाई मारा पीटा घटना के बाद इलाके में तनाव का माहौल बन गया है और पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। स्थानीय निवासी सुरेश पाल ने गंगाघाट कोतवाली में तहरीर देते हुए बताया कि वह रात लगभग 12:30 बजे अपने मोहल्ले में आयोजित जागरण देखने गया था। वहां उसका कुछ लोगों से विवाद हो गया, जिसके बाद उन लोगों ने उसे लाठी, डंडे और तलवार से पीटना शुरू कर दिया। सुरेश पाल ने बताया कि पहले तो

करोड़ों लागत से निर्मित विशाल स्मृति भवन का किया गया स्थलीय निरीक्षण

अमन लेखनी समाचार

बीघापुर, उन्नाव। विशेष सचिव, संस्कृति विभाग उ०प्र० शासन रवीन्द्र कुमार प्रथम तथा कुलपति, भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय लखनऊ, माण्डवी सिंह द्वारा संयुक्त रूप से पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की जन्मस्थली, गढ़ाकोला उन्नाव में रू० 14.6434 करोड़ की लागत से निर्मित विशाल स्मृति भवन, पुस्तकालय एवं अन्य संरचना कार्य का स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान विशेष सचिव व कुलपति द्वारा विशाल स्मृति भवन में गैलरी, मीडिया हॉल, ऑफिस डायरेक्टर कक्ष, कैटीन, वीआईपी कक्ष, ट्रेनिंग कक्ष, लाइब्रेरी, रसोई घर व आडियो विजुअल कक्ष तथा ऑडिटोरियम, ग्रीनरूम आदि का जायजा लेते हुए निर्माण कार्य की गुणवत्ता व निर्धारित मानकों आदि की जानकारी ली



गयी। साथ ही कार्यदायी संस्था को निर्देश दिए गए कि निरीक्षण के दौरान जो भी कमियां पायी गयी हैं उन्हें शीघ्रतापूर्वक पूर्ण कराया जाए ताकि इस भवन का संचालन किया जा सके। निरीक्षण के उपरांत उन्होंने कहा कि निराला जी की स्मृति में बनाए गए इस विशाल भवन का जल्द से जल्द शुभारंभ किया जाएगा ताकि संस्कृति के क्षेत्र की जानकारी क्षेत्र वासियों के साथ-साथ पूरे हिंदुस्तान को मिल सके। कहा कि इसके संचालन के लिए अलग से पूरी कार्य योजना बनाई

जाएगी, जिसमें साफ-सफाई सहित अन्य कार्यों के लिए लोगों को नियुक्त किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह भवन इस उद्देश्य से बनाया गया है कि यहां पर आने के उपरांत लोगों को साहित्य के क्षेत्र में अच्छी अनुभूति प्राप्त हो सके। भविष्य में इस स्थान को साहित्य के क्षेत्र में रिसर्च सेंटर के रूप में भी विकसित किया जाएगा। संस्कृत विभाग द्वारा बनाए गए इस भवन को संस्कृत महाविद्यालय से जोड़ा जाएगा ताकि इस क्षेत्र के लोगों को संस्कृत महाविद्यालय में होने वाले कार्यक्रमों

दो ट्रकों की आमने सामने भिड़ंत, चालक की मौत, दो घायल

अमन लेखनी समाचार

पुरवा, उन्नाव। कोतवाली क्षेत्र में उन्नाव-पुरवा मार्ग पर दो ट्रकों की आमने-सामने भिड़ंत हो गई। दुर्घटना में एक ट्रक चालक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरे ट्रक में सवार चालक और परिचालक गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस ने घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया और मृतक के शव को पोस्टमार्टम में भर्ती कराया गया है। मृतक की पहचान प्रदीप सिंह पुत्र धर्मेश बहादुर सिंह के रूप में हुई, जो थाना अचलगंज क्षेत्र के ग्राम कच्छवाहन मजरा आटा पोस्ट बंधरा का निवासी था। प्रदीप उन्नाव शहर से ट्रक में माल लेकर सोहरामऊ की तरफ जा रहा था। जैसे ही वह गोकलपुर गांव के पास पहुंचा, सामने से आ रहे ट्रक से उसकी सीधी टक्कर हो गई। दूसरे ट्रक में सवार



बाराबंकी जिले के हैदरगढ़ निवासी चालक धनीराम पुत्र गुरु प्रसाद और परिचालक सुमित पुत्र राजकुमार गंभीर रूप से घायल हो गए। थाना पुलिस के अनुसार, प्रदीप सिंह की मौके पर ही मौत हो गई जबकि धनीराम और सुमित को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मृतक के परिजनों को सूचना दे दी है और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। इस्पेक्टर पुरवा राकेश कुमार गुप्ता ने बताया कि पुलिस मामले की जांच-पड़ताल कर रही है।

चेतवानी बिंदु के नजदीक पहुंच गया गंगा का जलस्तर

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। पश्चिमी बांधों से लगातार पानी छोड़े जाने के कारण गंगा नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ने लगा है। शुकलागंज की ओर चेतवानी बिंदु की ओर जलस्तर पहुंचने से पश्चिमी क्षेत्र के निचले इलाकों में पानी भर गया है, जिससे वहां के निवासियों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। गंगा के जलस्तर में तेजी से वृद्धि दर्ज की गई है। केन्द्रीय जल आयोग के अनुसार, रविवार शाम को गंगा का जलस्तर 111.360 मीटर मापा गया था। इसके बाद सोमवार को जलस्तर में बढ़ोत्तरी हुई और दोपहर एक बजे यह 111.510 मीटर तक पहुंच गया। शाम छह बजे तक जलस्तर 111.570 मीटर मापा गया।

मंगलवार को भी जलस्तर में बढ़ोत्तरी दर्ज की गई। जो चेतवानी बिंदु 112 मीटर से केवल 43 सेंटीमीटर दूर है। जलस्तर के इस बढ़ाव ने कई निचले इलाकों को प्रभावित किया है। गोताखोर, सैय्यद कं पाउंड, कबला, हुसैन नगर, चंपापुरवा, तेजीपुरा, मनसुख खेड़ा और अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में भी बाढ़ का पानी पहुंच चुका है। इन क्षेत्रों में लोगों के घरों के आस-पास पानी भर गया है, जिससे दैनिक जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। स्थानीय निवासियों ने बताया कि कई घरों में पानी घुस गया है और मवेशियों की सुरक्षा भी एक बड़ी चुनौती बन गई है। बाढ़ के पानी के कारण स्थानीय सड़कों और गलियों में भी जल भरवा हो गया है, जिससे आवागमन मुश्किल हो गया है। प्रशासन और राहत कार्यकर्ताओं ने

प्रभावित क्षेत्रों में राहत और बचाव कार्य शुरू कर दिए हैं। बचाव दल के सदस्य प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाने और जरूरी सामग्री की आपूर्ति सुनिश्चित करने में लगे हैं। स्थानीय प्रशासन ने बाढ़ से निपटने के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। उन्होंने बाढ़ राहत केंद्र स्थापित किए हैं और त्वरित प्रतिक्रिया के लिए टीमें को तैनात किया है। इसके साथ ही, जिला प्रशासन ने नदी के किनारे बसे लोगों को सुरक्षित स्थानों पर जाने की सलाह दी है। इस बीच मौसम विभाग ने आने वाले दिनों में अधिक बारिश की संभावना जताई है, जिससे जलस्तर और बढ़ने के आशंका है। प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि वे सतर्क रहें और किसी भी आपात स्थिति में आपातकालीन सेवाओं से संपर्क करें।

की सीधी जानकारी मिल सके। उन्होंने बताया है कि यहां पर आने वाले वीआईपी आवासीय कक्ष बनाए जाने का भी प्रयास किया जाएगा जिससे कि दूर-दराज क्षेत्रों से आए हुए वीआईपी आगंतुकों के लिए रुकने की व्यवस्था की जा सके। इस विशाल स्मृति भवन से क्षेत्र में स्थापित डिग्री कॉलेज के छात्र-छात्राओं को भी जोड़ा जाएगा जिससे कि यहां की संस्कृति एवं भाषा का सद्गुण्य कर विकास लोगों तक पहुंचाया जा सके। निरीक्षण में सहायक निदेशक (विधि) संस्कृति निदेशालय लखनऊ श्री तुहिन द्विवेदी, रजिस्ट्रार, भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय लखनऊ, सृष्टि धवन, उप जिलाधिकारी बीघापुर क्षितिज द्विवेदी, जिला पर्यटन अधिकारी संतोष कुमार सिंह, कार्यदायी संस्था के सहायक अभियंता पूरज शर्मा सहित अन्य अधिकारी/कर्मचारी आदि उपस्थित रहे।

ग्रीन एंड क्लिन से जुड़े शिक्षकों ने शुरू किए प्रयास, पौधों की रक्षा का लिया संकल्प

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। सीनियर सब इस्पेक्टर अनुप मिश्र और शिक्षक प्रदीप वर्मा द्वारा ग्रीन एंड क्लिन उन्नाव में शिक्षकों के जुड़ने से एक नया रंग देखने को मिल रहा है। बच्चे अपने शिक्षकों संग खुशी खुशी पौधों को रोपित करते नजर आ रहे हैं। तीन टोलियों में अपनी जिम्मेदारी निभाने को तैयार हैं बच्चे। ग्रीन एंड क्लिन उन्नाव से जुड़कर आज अजय यादव, दिलीप विमल, रवि वर्मा, मोहिनी पटेल, मीनू जयसवार, अंकिका त्रिपाठी, आशा यादव, मनीष मिश्र ने आज बच्चों संग विद्यालयों में पौधे लगाए। बीघापुर में प्रांवि० पृथ्वीखेड़ा में पर्यावरण संरक्षण की मुहिम के तहत ईचांज शिक्षिका रुचि वर्मा, ग्राम प्रधान सुनील



कुमार, आंगनबाड़ी कांति देवी, शान्ति देवी, मुन्नी देवी, सरांजिनी अभिभावकों की उपस्थिति में बच्चों की टोली बनाकर आम के बुझ लगाए गए। पर्यावरण संरक्षण की सीख दी और पेड़ों के महत्व पर चर्चा की। ग्रीन ब्रिगेड में शिवांशी, महिमा, अन्वी, आसिया, अमन दीप, कृष्ण दीप, आकांश, आराध्या, शहनाज,

अमन लेखनी समाचार

फतेहपुर चौरासी, उन्नाव। बाइक सवार बद्मासो ने बैंक सेवा केन्द्र संचालक से घर लौटते समय चाकू लगाकर लगभग दो लाख अस्सी हजार रुपए लूट लिए। घटना को लेकर पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। सूचना पर आसीवन, फतेहपुर चौरासी व सफ़ीपुर पुलिस व एसपी सिद्धार्थ शंकर मीणा सहित अन्य अधिकारियों ने घटनास्थल की जांच पड़ताल की। एसपी के निर्देश पर मुकदमा दर्ज हुआ है। मंगलवार को आईजी रंज लखनऊ प्रशांत कुमार ने भी घटनास्थल का निरीक्षण कर पीड़ित से बातचीत कर मातहतों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। थाना आसीवन क्षेत्र के गांव टिकरा कुमेदान निवासी छेदन प्रसाद पुत्र मेवालाल स्टेट बैंक आफ इंडिया



का बीसी प्लांट चलता है। वह सोमवार की देर शाम बाइक से सफ़ीपुर स्थित भारतीय स्टेट बैंक आफ इंडिया से रुपए निकालकर घर जा रहे थे। अभी वह फतेहपुर चौरासी थाना क्षेत्र के चौधरी खेड़ा सफ़ीपुर शारदा नहर मार्ग पर मुंडा कोठी के समीप पहुंचा था कि तभी एक बाइक पर सवार तीन बद्मासों ने चाकू दिखाकर उसके पास से दो लाख अस्सी हजार रुपये लूट लिए और लुटेरे मौके से फरार हो गए। पीड़ित ने

पीआरबी को सूचना दी। सूचना पर देर रात एसपी सिद्धार्थ शंकर मीणा, एडिशनल एसपी प्रेमचंद, बांगरमऊ सीओ अरविंद चौरसिया, सफ़ीपुर सीओ माना राय सहित भारी संख्या में पुलिस बल घटनास्थल पर पहुंचा और मौके की जांच पड़ताल की, साथ ही पीड़ित से मामले के संदर्भ में कई बिंदुओं पर पूछताछ भी की है। घटना के राजफाश के लिए कई टीमें लगाई गई है। एसपी के निर्देश पर पीड़ित की तहरीर पर मुकदमा दर्ज किया गया है। घटना की जानकारी के बाद मौके पर आईजी प्रशांत कुमार मौके पर पहुंचे जहां उन्होंने लूट का शिकार हुए पीड़ित से बात की और कई बिंदुओं पर जांच पड़ताल की और आवश्यक निर्देश दिए। घटनास्थल पर कई थानों की पुलिस मौजूद रही।

अस्थायी गौशाला में ग्रामीणों ने लगाया गमन का आरोप

अमन लेखनी समाचार

पुरवा, उन्नाव। ग्राम त्रिपुरारिपुर स्थित अस्थायी गौशाला में विद्युतीकरण व उपचार कक्ष के नामों लाखों के गमन का आरोप ग्रामीणों ने जिम्मेदारों पर लगाया है। खंड विकास अधिकारी ने कार्यवाही का भरोसा दिलाया है। विकास खंड के अंतर्गत ग्रामसभा त्रिपुरारिपुर निवासी संजय तिवारी व आशुतोष सिंह आदि ग्रामीणों के मुताबिक उनकी ग्रामसभा में अस्थायी गौशाला स्थित है जिसमें बीते 22 जुलाई 24 को विद्युतीकरण के नाम पिलर व बिजली वर्क को 1 लाख 95 हजार 06 सौ 29 रुपये निकाले गये। जबकि गौशाला में बल्लू के सहारे 2 सौ मीटर केबिल से आपूर्ति की गयी है। वहीं बीते 27 जुलाई 24 को उपचार कक्ष व अतिरिक्त कार्य के नाम में 1 लाख 99 हजार 4 सौ 48 रुपए निकाले गये। ग्रामीणों में कैलाश शंकर, वीरेंद्र कुमार, उमाशंकर, पंकज पटेल, राजेश व बाबू मिस्त्री आदि ने खंड विकास अधिकारी को ज्ञापन सौंपकर मामले की जांच बाद कार्रवाई की मांग की है। खंड विकास अधिकारी डा संतोष कुमार श्रीवास्तव ने जांच बाद कार्रवाई का आश्वासन दिया है।



दुष्कर्म के आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

अमन लेखनी समाचार

सुमेरपुर, उन्नाव। थाना बिहार पुलिस द्वारा दुष्कर्म के वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार कर वैधानिक कार्यवाही की गई। थाना बिहार क्षेत्र से नाबालिक लड़की के भाई ने 18 अक्टू को थाना बिहार में तहरीर देते हुए बताया था कि उसकी नाबालिक 15 वर्षीय बहन मेरे व मेरी माँ के न रहने पर बिन बताए घर से 10 हजार रुपये लेकर चली गयी है। शक के आधार पर भाई ने विवेक उर्फ विशाल पुत्र मुनीलाल निवासी ग्राम खुसुआ थाना बिहार को नामजद कराया था। तहरीर के आधार पर थाना बिहार पुलिस द्वारा मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही करते हुए नाबालिक लड़की को बरामद कर पीड़िता के बयान धारा के अवलोकन के आधार पर मुकदमा पाक्सो एक्ट की



वृद्धि की गयी। उक्त मुकदमे में वांछित चल रहे अभियुक्त विवेक उर्फ विशाल पुत्र मुनीलाल उर्फ राजेंद्र कुमार निवासी ग्राम खुसुआ थाना बिहार जनपद उन्नाव करीब 20 वर्ष को लालगंज हाईवे आकमुपुर तिराहे के पास से थाना बिहार पुलिस के उप निरीक्षक वीरेंद्र कुमार यादव व का०अतुल कुमार द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया और वैधानिक कार्यवाही की गयी।

सद्विध परिस्थितियों में फांसी के फंदे पर लटकता मिला युवती का शव

अमन लेखनी समाचार

हसनगंज, उन्नाव। कोतवाली क्षेत्र के पिछवाड़ा गांव में मंगलवार को शाम पांच बजे सद्विध परिस्थितियों में युवती का शव आम के पेड़ से लटकता मिला कल्पना सैनी पुत्री जनाती सैनी उम्र 19 वर्ष युवती का शव फांसीत पुत्र हबीब के बाग में आम के पेड़ पर फांसी के फंदे से युवती का शव लटकता मिला शव 6 दिन पुराना लग रहा था वही मृतक के दो भाई और दो बहन हैं तीसरे नंबर पर मृतक थी सबसे बड़ी बहन लक्ष्मी, उत्तम मीनू अमन माता रामलली का रो रो बुरा हाल है वही युवती के भाई ने बताया चार तारिक को दोपहर में कल्पना शींच के लिए घर से बाहर चली गई थी दो-तीन घंटे तक वापस न आने के कारण आस पास काफी खोज की गई मगर ना मिलने पर हसनगंज कोतवाली में गुमसुदगी दर्ज कराई गई थी जहाँ 6 दिन बाद युवती शव मंगलवार को शाम पांच बजे सद्विध परिस्थितियों में आम के पेड़ से लटकता मिला शव 6 दिन पुराना लग रहा था हसनगंज कोतवाली प्रभारी चंद्रकांत मिश्रा ने बताया 6 दिन पहले भाई ने गुम सुदगी दर्ज कराई थी आज घटना की जानकारी मिली की युवती का शव आम के पेड़ से लटकता मिला है शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया गया।



ग्राम समाज की भूमि पर बने मंदिर पर चला सरकारी बुलडोजर

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। सिंकंदरपुर सरोसी ब्लाक के ग्राम कनिकमऊ में प्रशासन ने जांचोपरांत परती भूमि पर ग्रामीणों द्वारा बनाया गया मंदिर जेसेबी तोड़ दिया। जिसमें हनुमान जी व अन्य मूर्तियों के खंडित होने के कारण ग्रामीणों में काफी रोष व्याप्त है। ज्ञातव्य हों कि ग्राम कनिकमऊ में गाटा संख्या 254 मे पहले से ही रामसजीवन का विद्यालय बना हुआ है जिसके सामने ही गाटा संख्या 259 है जो ग्राम समाज की भूमि है जिस पर गांव के कुछ लोगों ने मंदिर निर्माण कार्य कराया और मूर्ति स्थापित करने के बाद पूजा अर्चना और भंडारे का भी आयोजन किया गया। लेकिन कुछ लोगों की शिकायत के बाद जलखपाल और तहसील दार द्वारा जांच की गई जिसमें मंदिर निर्माण सरकारी भूमि में पाने पर लेखपाल तहसीलदार ग्राम प्रधान आदि लोगों की मौजूदगी में जेसीबी से तोड़ा गया साथ ही मूर्तियों



को भी जेसीबी से तोड़ा गया जिससे मंदिर के पुजारी राम सजीवन त्रिवेदी और ग्रामीण बहुत आहत हैं जिनका कहना है को की मंदिर तोड़ दिया तो कोई बात नहीं लेकिन कम से कम मूर्तियों को न तोड़ते जिससे उन्हें हम कहीं और स्थापित कर उनकी पूजा अर्चना करते रहते। सरकारी अमले के इस कृत्य से ग्रामीणों में काफी रोष व्याप्त है। अतः योगी सरकार से मेरी गुजारिश है इस तरीके का कृत्य ना करवाया जाए जो की भगवान की मूर्ति भी की गई खंडित और पुजारी पर किया गया हमला है।

मार्ग दर्शन शिविर का किया गया आयोजन

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। जिला सेवायोजन अधिकारी ने बताया कि आज डा० विशम्भर दयाल त्रिपाठी, राजकीय जिला पुस्तकालय, उन्नाव में एक मार्गदर्शन शिविर का आयोजन जिला सेवायोजन कार्यालय, उन्नाव द्वारा किया गया, जिसमें वाचनालय में उपस्थित सभी अभ्यर्थियों को जिला सेवायोजन अधिकारी, प्रीति चन्द्रा द्वारा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में तनाव प्रबन्धन करने हेतु



अवगत कराया गया एवं सहायक जिला सेवायोजन अधिकारी आस्था पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

गणपति बप्पा को भक्तो ने लगाया छप्पन भोग

अमन लेखनी समाचार

शुकलागंज, उन्नाव। श्री गणेश नवयुवक सेवा समिति की ओर से भातू फार्म में विराट 28वां श्री गणेश महोत्सव मनाया गया। जहां भक्तों ने पूजा को छ्पन भोग लगाया। इसके साथ ही सुबह शाम महाअरती का आयोजन किया गया। जहां आचार्यों ने विधि विधान से बाबा अर्चना कराई। वहीं द्वारिका मोहिनी कम्पाउंड में श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन हुआ। इसके साथ ही साकेतपुरी में श्री सिद्धि विनायक गणपति मंडल की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। इसके अलावा मिश्रा कालोनी, चंपापुरवा, पानी रोड, राम नगर, ऋषी नगर, जेहूर नगर राजनगर, आदि स्थानों पर गणेश महोत्सव में कार्यक्रम आयोजित किये गये। वहीं चंपापुरवा शिव पार्क के सुबह शाम महाअरती का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें श्रद्धालु वृद्ध चढ़ कर गजानन की आरती कर रहे हैं।



सम्पादकीय

जल व पर्यावरण संरक्षण के लिए मिशन मोड में काम हो

जल संरक्षण व पर्यावरण संरक्षण 21वीं सदी की सबसे बड़ी चुनौतियां हैं। पृथ्वी पर पेयजल का संसाधन सीमित है, वहीं पर्यावरण की अनदेखी से जलवायु परिवर्तन की दुश्चरियां और धरती पर तापमान बढ़ रहा है। भारत के पास दुनिया के कुल ताजे पानी का केवल चार प्रतिशत है। इसलिए जल संरक्षण सरकार व नागरिकों का मिशन होना चाहिए। जल खपत को लेकर हम मितव्ययी नहीं हैं। जल की उपलब्धता में भी असमानता है। शहरों में जलापूर्ति बड़ा टास्क है। आजादी के 77 वर्ष बीत जाने के बाद भी देश की करीब एक तिहाई से अधिक आबादी को शुद्ध पेयजल तक पहुंच नहीं है। यूं तो भारत में अनेक नदियां हैं, झीलें हैं, सरोवर हैं, तीन ओर से महासागरों से घिरा है, इसके बावजूद पेयजल के सीमित स्रोत हैं। हाल के वर्षों में भारत में सभी क्षेत्रों में भूजल स्तर लगातार गिरता गया है। पानी बचाने को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चिंता जायज है। जल संचयन राष्ट्रीय अभियान बनना चाहिए। पीएम ने जल-संचयन के लिए जल का दुरुपयोग रोकने, उसके पुनः इस्तेमाल और रिचार्ज करने के साथ ही उसके पुनर्चक्रण के मंत्र को अपनाने का आह्वान किया है। लेकिन जल संचयन अभियान तभी सफल होगा, जब यह सरकार की नीतियों की प्राथमिकताओं में शामिल होगा। देश के नागरिकों में न ही जल की बचत को लेकर जागरूकता है, न जल के उपयोग को लेकर अनुशासन है, न ही जल आपूर्ति विभाग में प्रशासनिक दक्षता है। जलापूर्ति में सरकारी लापरवाही का नतीजा ही है कि देश में 14 हजार करोड़ रुपये से भी ज्यादा निजी जलापूर्ति कारोबार है, समय के साथ ये बढ़ रहे हैं। पीएम मोदी की राजग सरकार ने घर-घर नल से जल आपूर्ति मिशन शुरू किया, बुनियादी स्तर पर इसे लागू भी किया है, पर रखरखाव व निरंतर आपूर्ति प्रबंधन में कमी के चलते नल से जल आपूर्ति योजना दम तोड़ रही है। देश में वर्षा जल संरक्षण के उपाय भी सीमित हैं। 'जल संचयन जागूवारी' पहल अच्छा प्रयास है, पर इसमें भारी सरकारी निवेश भी होना चाहिए। नहीं तो स्वच्छ भारत अभियान का ह्रस्व देश के सामने है। अनेक सैलिब्रिटी को ब्रांड अंबेस्डर बनाने, पीएम से लेकर मंत्रियों के झाड़ू पकड़ने, रैंडियो-टीवी पर प्रचार करने के बावजूद वित्तीय ढांचा साफ नहीं होने के चलते स्वच्छ भारत अभियान अपनी सफलता के उच्च स्तर को हासिल नहीं कर सका। नीतिगत स्थिरता व पर्याप्त वित्तीय आवंटन नहीं होने से सरकार का रिस्क इंडिया, स्मार्ट सिटी, स्मार्ट विलेज समेत अनेक योजनाओं की स्थिति दयनीय है। आत्मनिर्भर भारत, वोकरा फॉर लोकल, मेक इन इंडिया जैसे अभियान नारक तक सीमित हैं। केवल सांस्कृतिक हवाला देने से कोई योजना सिरे नहीं चढ़ेगी, सरकारी प्रयास व निवेश आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन से जल संकट का नाता है। कहीं जलवायु बारिश, कहीं सूखा, कहीं भूकंप, जलवायु परिवर्तन अति क्लाइमेट चेंज के दुष्परिणाम हैं। यूरोपीय जलवायु परिवर्तन सेवा के मुताबिक, 2024 अब तक का सबसे गर्म वर्ष होगा। 'इम्प्रेस यूके' द्वारा संचालित तथा 'अर्थ4ऑल' एवं 'ग्लोबल कॉमन्स अलायंस' (जोसीए) द्वारा अधिकृत 'ग्लोबल कॉमन्स सर्वेक्षण 2024' के मुताबिक, 80 प्रतिशत भारतीय पर्यावरण को होने वाले नुकसान को अपराध घोषित करने के पक्ष में हैं। भारत क्लाइमेट चेंज पर पैरिस करार में लीडिंग भूमिका में है, इसलिए सरकार पर भारत में पर्यावरण संरक्षण को नीतिगत स्तर पर बढ़ावा देने का दबाव भी है। सरकार को जल व पर्यावरण संरक्षण के लिए मिशन मोड में काम करने की जरूरत है।



» विकास की राह
शिवेश प्रताप

सरकार ने अपने पहले बजट में उच्च शिक्षा और उद्यमिता के समर्थन के लिए महत्वपूर्ण संसाधन आवंटित किए हैं। शिक्षा के लिए वित्तीय समर्थन का विस्तार एक योजना के साथ किया गया है, मोदी 3.0 सरकार के प्रारंभिक प्रयास रोजगार सृजन, कौशल विकास, वित्तीय समर्थन, और उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने वाले एक बहु-आयामी दृष्टिकोण के माध्यम से युवा नाराजगी को कम करने के लिए एक स्पष्ट प्रतिबद्धता दर्शाता है। युवाओं की जरूरतों और आकांक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करके, सरकार एक अधिक जीवंत और गतिशील भविष्य की नींव रख रही है, जहां युवा अपनी पूरी क्षमता प्राप्त कर सकते हैं और राष्ट्र की प्रगति में सार्थक योगदान दे सकते हैं।

रोजगार समाधान करती मोदी सरकार

भारत में बेरोजगारी एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। हाल ही में प्रकाशित इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन और मानव विकास संस्थान की भारतीय रोजगार रिपोर्ट 2024 में यह पाया गया कि भारत में शिक्षित युवाओं के बेरोजगार होने की संभावना अधिक है। अशिक्षित लोगों में बेरोजगारी दर 3.4% है, जबकि स्नातक युवाओं में यह दर 29.1% है। 12वीं पास की बेरोजगारी दर 2000 में 35.5% थी, जो 2022 में 65.7% हो गई है। बेरोजगारी की इस स्थिति को देखते हुए, मोदी 3.0 सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती है कि वे इस समस्या का समाधान कैसे करें। बेरोजगारी का मुद्दा सरकार के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि हाल के चुनावों में यह प्रमुख मुद्दा बन चुका है।

गुणवत्ताहीन शिक्षा : भारत में शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है, लेकिन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव भी साफ नजर आ रहा है। कुकुरमुत्ता की तरह देशभर में स्कूल और कॉलेज खुल रहे हैं, लेकिन उनमें गुणवत्ता की कमी है। एनुअल स्टेट्स ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट के अनुसार, देश की शिक्षा व्यवस्था खस्ताहाल है। प्रामाण्य क्षेत्रों में 10 साल के बच्चों की शिक्षा का स्तर भी काफी कमजोर है। रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत में हर साल 1.30 करोड़ लोग नौकरी की तलाश में निकलते हैं, लेकिन केवल एक चौथाई एमबीए, पांच में एक इंजीनियर और दस में एक ग्रेजुएट ही नौकरी के योग्य होते हैं।

असंगत कौशल विकास: स्किल इंडिया मिशन जैसे प्रयासों के बावजूद कौशल विकास की दिशा में काफी कम प्रगति हुई है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की एक रिपोर्ट बताती है कि देश के 85% स्कूलों में आज भी वोकेशनल कोर्स उपलब्ध नहीं हैं। प्रशिक्षित युवाओं में से केवल 20% को ही रोजगार मिल पाया है।

रोजगार संकेत बाजार की कमी: भारत में रोजगार संचित क्षेत्र में काम करने वाली आबादी की संख्या बहुत कम है। देश का युवा वर्ग, शिक्षित होने के बावजूद भी असंगत क्षेत्रों में काम करने के लिए मजबूर है।

रिक्तियों और नए पदों का अभाव: सरकारी आंकड़ों के अनुसार, भारत में प्रति हजार जनसंख्या पर केवल 16 सरकारी कर्मचारियों हैं, जो चीन में 57 और अमेरिका में 77 की तुलना में काफी कम है। सरकारी नौकरियों में भी कई रिक्तियां हैं जो वर्षों से खाली पड़ी हैं।

मोदी सरकार की पहल और समाधान : सरकार गठन के बाद वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत किए गए नवीनतम बजट में, मोदी 3.0 सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह भारत के युवाओं की चिंताओं को संबोधित करने और उनके तनाव को कम करने के लिए प्रतिबद्ध है।

रोजगार सृजन, कौशल विकास, स्टार्टअप समर्थन और शैक्षिक अवसरों पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्थायी वातावरण तैयार करना है जो युवाओं को आधुनिक अर्थव्यवस्था में फलने-फूलने में सक्षम बनाएगा

विकास के लिए बजट : मोदी 3.0 सरकार की युवा नाराजगी को कम करने की रणनीति का केंद्र बिंदु रोजगार और कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए पांच योजनाओं का एक व्यापक पैकेज है। इस पहल से अगले पांच वर्षों में पूरे भारत में 4.1 करोड़ से अधिक युवाओं को लाभ मिलने की उम्मीद है, जिसमें 2 लाख करोड़ का



केंद्रीय प्रावधान है। ये उपाय एक खास समय पर आए हैं, जहां सार्थक नौकरी के अवसरों की बढ़ती मांग और कौशल वृद्धि की आवश्यकता है। बजट का रोजगार सृजन व कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करना युवाओं द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों का सीधा जवाब है, खासकर आर्थिक व्यवधानों और तकनीकी प्रगति के मद्देनजर जिसने नौकरी बाजार को पुनः आकार दिया है।

युवाओं को प्रभावित करने वाले कदम

एंग्ल टैक्स समाप्त: स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने निवेशकों के लिए एंग्ल टैक्स को समाप्त कर दिया है। इस कदम से स्टार्टअप में अधिक निवेश को प्रोत्साहित किया जाएगा, जिससे युवा उद्यमियों को अत्यधिक कराधान के बोझ से मुक्त होकर नवाचार करने में मदद मिलेगी।

वेतन योजना : औपचारिक क्षेत्रों में रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए एक नई योजना उन सभी व्यक्तियों को एक महीने का वेतन प्रदान करेगी जो पहली बार कार्यबल में प्रवेश कर रहे हैं। इसके अलावा, एक प्रत्यक्ष लाभ अंतरण योजना के तहत, ईपीएफओ (कर्मचारी भविष्य निधि संगठन) में पंजीकृत पहली बार

के कर्मचारियों को 15 हजार तक के वेतन पर तीन किस्तों में एक महीने का वेतन दिया जाएगा। इससे लगभग 210 लाख युवाओं को लाभ मिलने की उम्मीद है।

विनिर्माण में नौकरी सृजन: विनिर्माण क्षेत्र में नौकरी सृजन के लिए एक समर्पित योजना भी लाई गई है। इससे न केवल तत्काल रोजगार के अवसर मिलेंगे बल्कि एक मजबूत औद्योगिक आधार बनाने में भी मदद मिलेगी, जो दीर्घकालिक आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है।

कौशल विकास पहल : राज्य सरकारों और उद्योग सझेदारों के सहयोग से सरकार ने अगले पांच वर्षों में 20 लाख युवाओं को कौशल देने के लिए पहल की है। ये कार्यक्रम आधुनिक अर्थव्यवस्था की मांगों के साथ संरेखित करने के लिए डिजाइन किए गए हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि युवा लोग उन क्षेत्रों में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल रखते हैं जो उच्च मांग में हैं।

इंटरशिप के अवसर: व्यावहारिक अनुभव के महत्व को पहचानते हुए एक व्यापक योजना शुरू की गई है, जिसमें 500 शीप कंपनियों में 1 करोड़ युवाओं को पांच वर्षों में इंटरशिप प्रदान की जाएगी। प्रत्येक इंटरन को 5,000 प्रति माह भता और 6,000 की एक बार की सहायता दी जाएगी, जिससे उन्हें मूल्यवान उद्योग अनुभव प्राप्त करने और रोजगार क्षमता बढ़ाने में मदद मिलेगी।

आर्थिक सहायता और शैक्षिक अवसर

युवाओं के लिए, सरकार ने अपने पहले बजट में उच्च शिक्षा और उद्यमिता के समर्थन के लिए महत्वपूर्ण संसाधन आवंटित किए हैं। शिक्षा के लिए वित्तीय समर्थन का विस्तार एक योजना के साथ किया गया है, जिसमें धरेलू संस्थानों में उच्च शिक्षा के लिए 10 लाख तक के ऋण प्रदान किए जाएंगे। वहीं, युवा उद्यमियों को समर्थन देने के लिए, 'तरुण' श्रेणी के तहत पहले के ऋणों का सफलतापूर्वक पुनर्भूगतान करने वालों के लिए मुद्रा ऋण की सीमा 10 लाख से बढ़ाकर 20 लाख कर दी गई है। मोदी 3.0 सरकार के प्रारंभिक प्रयास रोजगार सृजन, कौशल विकास, वित्तीय समर्थन, और उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने वाले एक बहु-आयामी दृष्टिकोण के माध्यम से युवा नाराजगी को कम करने के लिए एक स्पष्ट प्रतिबद्धता दर्शाता है। युवाओं की जरूरतों और आकांक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करके, सरकार एक अधिक जीवंत और गतिशील भविष्य की नींव रख रही है, जहां युवा भारतीय अपनी पूरी क्षमता प्राप्त कर सकते

दो टूक

संजीव टाकुर



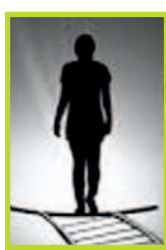
भारत मूल के मतदाता प्रभावित करेंगे अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव

अमेरिका में 60वां राष्ट्रपति चुनाव 5 नवंबर को होगा। इस चुनाव से अमेरिका में 47वां राष्ट्रपति एवं 50वां उपराष्ट्रपति चुना जाएगा। अमेरिका एक शक्ति संपन्न राष्ट्र है और उसकी नीतियां, राजनीति एवं कूटनीति पूरी दुनिया के देशों को प्रभावित करती है, फिर वह राजनीतिक सामरिक अथवा व्यापारिक लेनदेन, समझौते या युद्ध में मदद की बात हो अमेरिका का दखल लगभग सभी मसलों में एक जैसा रहता है। यह अलग मुद्दा है कि पश्चिम एशिया, चीन, रूस एवं नॉर्थ कोरिया जैसे देश अमेरिका के धुर विरोधी रहे हैं। चीन और रूस के सामरिक, व्यापारिक और एर्कीक मसलों पर आपस में टकराते रहे हैं। यह गौर करने वाली बात है कि अमेरिका में अगला राष्ट्रपति ही अमेरिका सहित अन्य कई देशों के दिशा-निर्देश तय करेगा। चुनाव से पहले अमेरिका में रह रहे भारतीय समुदाय के एक बड़े समूह ने चुनाव में भारतीय अमेरिकी मतदाताओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एक विशेष प्रयोजन शुरू किया है। एक नान प्रॉफिटेबल संस्था फाउंडेशन फॉर इंडिया एंड इंडियन डायसपोरा स्टडीज ने एक अभियान चलाया है जिसे इंडो अमेरिकन वोटर्स मेटर नाम दिया गया है जिसमें तमाम भारतवासियों को एक छत के नीचे लाने का प्रयास किया जा रहा है।

अमेरिका में स्विंग राज्यों (बैटल-ग्राउंड) में निवासरत भारतीय मूल के मतदाता राष्ट्रपति चुनाव को खासा प्रभावित करने वाले होते हैं, उनको प्रभावित करने का प्रयास किया जाएगा। अमेरिका में रहने वाले भारतीय मूल के 42 लाख लोगों में लगभग 27 से 28 लाख मतदाता नागरिक हैं। ऐसे में भारतीय मतदाताओं की भूमिका राष्ट्रपति चुनाव में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। राष्ट्रपति के चुनाव में अमेरिका की 538 सीटों पर चुनाव होने हैं। ऐसे में डेमोक्रेटिक पार्टी की कमला हैरिस या रिपब्लिकन पार्टी के डोनाल्ड ट्रंप यदि 270 से ज्यादा सीट जीतते हैं तो वे राष्ट्रपति पद के हकदार हो जाएंगे। चूंकि डोनाल्ड ट्रंप की ज्यादा उम्र है, उन पर लगभग 34 अपराधिक प्रकरण भी न्यायालय में लंबित हैं। ऐसे में उनका पक्ष कमजोर दिखाई देने लगा है। एक सर्वे के अनुसार कई राज्यों में डेमोक्रेटिक पार्टी की कमला हैरिस डोनाल्ड ट्रंप से लोकप्रियता में काफी आगे चल रही है। कमला हैरिस के साथ डेमोक्रेटिक पार्टी के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार टीम वाल्स एवं डोनाल्ड ट्रंप के साथ उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार सीनेट जेडी वेंस होंगे, जेडी वेंस की पत्नी उपा चिलकुरी जो भारतीय मूल की है और वे पूरे दमखम के साथ रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवारों का प्रचार-प्रसार कर रही हैं।

अब वह डेमोक्रेटिक पार्टी की तरफ से भारतीय मूल के मतदाताओं को अपनी तरफ करने के लिए स्टार प्रचारक बन चुकी हैं। भारतीय मतदाताओं को रिश्ताने के लिए अलग-अलग भारतीय मूल के लोग सक्रिय हैं। यह तो तय है कि स्विंग स्टेट यानी बैटल-ग्राउंड में भारतीय मूल के मतदाता जिस पार्टी को वोट देंगे, वही पार्टी चुनाव जीतने में सक्षम होगी। डेमोक्रेटिक पार्टी को अमेरिका में उदारवादी दल माना जाता है और उसके मेनिफेस्टो में नागरिक अधिकारों में बढ़ावा, सामाजिक सुरक्षा को सुनिश्चित करना एवं जलवायु परिवर्तन में होने वाले नुकसान से निपटने हेतु उपाय करना शामिल है। दूसरी तरफ रिपब्लिकन पार्टी यानी ग्रैंड ओल्ड पार्टी मानी जाती है और इसके एंजेडे में सरकार की सीमाओं को छोटा करना, हथियार रखने एवं गर्भपात पर लगे प्रतिबंध को तुरंत हटाने की बात शामिल है। डेमोक्रेट पार्टी की कमला हैरिस रिपब्लिकन पार्टी के डोनाल्ड ट्रंप के अलावा राष्ट्रपति चुनाव के मैदाने जानें में स्वतंत्र उम्मीदवार जॉन एफ कैनेडी के भतीजे रॉबर्ट एफ कैनेडी भी चुनाव लड़ रहे हैं। अमेरिका के चुनाव के नतीजे से भारत के रिश्तों में थोड़ा बहुत परिवर्तन तो होगा ही, डोनाल्ड ट्रंप के पूर्व कार्यकाल में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं डोनाल्ड ट्रंप के संबंध निजी तौर पर काफी प्रगाढ़ रहे हैं। डोनाल्ड ट्रंप पाकिस्तान में दी जाने वाली अमेरिकी सहायता के खिलाफ रहे हैं। यदि डोनाल्ड ट्रंप जीते तो पाकिस्तान के लिए और बुरे दिन आने की संभावना है।

हड़बड़ी न करें, धैर्य का फल हमेशा मीठा होता है!



संकलित

दर्शन

किसी गुरुकुल में गुरुदेव बालकों को बाण चालाना सिखा रहे थे। एक अतिउत्साही शिष्य ने धनुष को इतनी जोर से खींचा कि उसके दो टुकड़े हो गए। गुरुदेव ने शिष्य को ज्ञान दिया कि अधीरता से योग्यता अपव्यय हो जाती है। लक्ष्य को भेदने के लिए जितनी ऊर्जा की आवश्यकता है उससे अधिक या कम ऊर्जा का प्रयोग करने पर लक्ष्य को साधना असंभव है। हमारा जीवन भी एक धनुष के समान है। यदि धैर्यपूर्वक ऊर्जा को धीरे-धीरे संचित करने के बाद निरंतरण के साथ इसे व्यय करने की कला सीख ली जाए तो लक्ष्य कितनी ही दूरी पर क्यों न हो उसे प्राप्त करना असंभव नहीं है। धैर्य का अर्थ मूक रहकर मात्र प्रतीक्षा करना नहीं है। धैर्य का अर्थ है उतेजनाग्रहित होकर अपने कार्य में निरंतर संलग्न रहना। किसी कार्य के प्रति अतिउत्साह अथवा असंयम उक्त कार्य के फल को परिपक्व नहीं होने देता। चाक पर चढ़े कच्चे घड़े को यदि आतुरता में समय से पहले उतार लिया जाए तो उसका आकार विकृत हो जाता है। हमें ऐसा भ्रम हो सकता है कि जीवन में प्रगति इतनी धीमी गति से हो रही है कि कोई परिवर्तन दिखाई नहीं देता। हम परिवर्तन की चाह में धैर्य छो बैठते हैं और शीघ्र सफलता की आकांक्षा में हड़बड़ी में ऐसे निर्णय ले बैठते हैं, जिनसे हमारा भविष्य बिगड़ सकता है। युवाओं में ऊर्जा का अधिक भंडार होता है। यह ऊर्जा उन्हें कार्य को जल्द से जल्द संपादित करके फल प्राप्त के लिए लालायित करती है। उन्हें इस ऊर्जा का सदुपयोग करना नहीं आता।

किसी व्यक्ति के विचार अच्छे नहीं, तो नीयत साफ नहीं



संकलित

प्रेरणा

महाभारत में द्युत क्रीड़ा में युधिष्ठिर दुर्योधन और शकुनि से सब कुछ हार गए थे। उस समय ये तय हुआ था कि जब पांडव 12 वर्ष का वनवास और 1 वर्ष का अज्ञातवास पूरा कर लेंगे, तब उन्हें उनका हारा हुआ राज्य लौटा दिया जाएगा। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव और द्रौपदी का 12 वर्ष का वनवास और 1 वर्ष का अज्ञातवास पूरा हो गया था। शर्त के मुताबिक, दुर्योधन को पांडवों का राज्य लौटाना था। इसके लिए श्रीकृष्ण पांडवों के दूत बनकर हस्तिनापुर पहुंचे। भगवान ने दुर्योधन से कहा कि पांडवों ने वनवास पूरा कर लिया है, अब उन्हें उनका राज्य लौटा दो। श्रीकृष्ण की बात सुनने के बाद दुर्योधन ने पांडवों को राज्य लौटाने से मना कर दिया। दुर्योधन ने कहा कि वो पांडवों को एक गांव भी नहीं देगा। दुर्योधन की जिद के आगे धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोणाचार्य भी कुछ बोल नहीं सके। इसके बाद श्रीकृष्ण दरबार से जान लगे तो दुर्योधन ने उनसे कहा कि आप हमारे अतिथि हैं, आप बिना भोजन किए न लौटें। श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं किसी के यहां खाना खाते समय दो बातें ध्यान रखता हूँ। पहली, मुझे बहुत भूख लगी हो। दूसरी, सामने वाला मुझे बहुत प्रेम से खिला रहा हो। अभी ये दोनों ही बातें नहीं हैं, न तो मुझे भूख है और न ही तुम मुझे प्रेम से निमंत्रण दे रहे हो। जैसा तुम्हारा स्वाभाव है, इसमें भी कोई पड़यंत्र हो सकता है। इतना कहकर श्रीकृष्ण वहां से चले गए और बाद में भगवान ने विदुर के यहां भोजन किया था।

अंतर्गमन



पालान काटने से कोई फायदा नहीं सर! बतुआ तो पानी में बह गया!

आज की पाती

हर किसी को मिले उचित पेंशन

यूपीएस अर्थात युनिफाइड पेंशन स्कीम से सरकारी कर्मचारियों को त्याग लाभ होगा और इससे त्याग नुकसान होगा। इस पर सभी के अपने-अपने विचार हो सकते हैं, लेकिन समय के साथ-साथ हर जगह हर चीज में परिवर्तन जरूरी है। इस नई पेंशन योजना से सरकारी कर्मचारियों को सेवानिवृत्त होने के बाद उनकी बारह महीनों के बेसिक वेतन का लगभग पचास प्रतिशत लिखित पेंशन देने का प्रावधान किया गया है। इसके लिए कर्मचारियों को लगभग पच्चीस साल तक नौकरी करने होंगी। इस योजना में और भी प्रावधान सरकार ने किए हैं। कुछ लोग नई पेंशन योजना से ज्यादा पुरानी पेंशन योजना को बेहतर बताएंगे। हर किसी को उचित पेंशन मिलनी चाहिए।

- विवेक जायसवाल, महासमुद्र

करंट अफेयर

हैरिस ने अगस्त में ट्रम्प से दोगुना से अधिक धन जुटाया

अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने दानदाताओं से अगस्त में पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से दोगुना से अधिक धन जुटाया है। हैरिस के प्रचार अभियान दल ने

शुक्रवार को यह जानकारी दी। प्रचार अभियान दल ने कहा कि राष्ट्रपति पद की प्रत्याशी घोषित होने के बाद अपने पहले माह में हैरिस ने 30 लाख दानदाताओं से करीब 36 करोड़ 10 लाख अमेरिकी डॉलर प्राप्त किए हैं। जबकि ट्रम्प की टीम ने कहा कि अगस्त में पूर्व उपराष्ट्रपति को दानदाताओं से करीब 13 करोड़ अमेरिकी डॉलर प्राप्त हुए हैं। हैरिस की टीम का कहना है कि अगस्त माह के अंत में उनके पास 4.4 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की धनराशि थी



ऑफ बीट

इस साल गर्मी ने तोड़ा रिकॉर्ड सबसे अधिक तपिश महसूस

वर्ष 2024 में गर्मी के मौसम में सबसे अधिक तपिश महसूस की गई जिससे यह साल सबसे अधिक गर्म साल रहने की संभावना बढ़ गई है। यूरोपीय

जलवायु सेवा 'कॉर्पोरनेक्स' ने शुक्रवार को इस बारे में जानकारी दी। वैज्ञानिकों ने कहा कि इस साल टूटे रिकॉर्ड पिछले साल ही बने थे जब मानव-जनित जलवायु परिवर्तन एवं अल नीनो के प्रभाव के कारण तापमान घरम स्तर पर पहुंच गया था। 'कॉर्पोरनेक्स' के अनुसार, जून, जुलाई और अगस्त को उत्तरी मौसम विज्ञान ग्रीष्मकालीन समय कहा जाता है और इस दौरान अतिरत (न्यूनतम) तापमान 16.8 डिग्री सेल्सियस रहा जो 2023 के रिकॉर्ड से 0.03 डिग्री अधिक है।



टैंड

जल संरक्षण अभियान

भारत में जनमागीदारी और जनआंदोलन से जल संरक्षण और प्रकृति संरक्षण का अनूठा अभियान चल रहा है। आज सूरत में 'जल संचय जनमागीदारी पहल' का शुभारंभ कर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

मानवता कलंकित हुई

उज्जैन में टिनटहाई फुटाथ पर महिला के साथ तुरुकमी की घटना अत्यंत भयावह है। आज पूरा देश सन्न है कि हमारा समाज किस ओर जा रहा है? खबरों के मुताबिक, रास्ते से गुजर रहे लोग महिला को बचाने की जगह वीडियो बना रहे थे। ऐसी घटना से मानवता कलंकित हुई है।

-पियंका गांधी वाड़ा, कांग्रेस महासचिव

रेलवे की आगारी

भारतीय रेलवे की सेवा में जीवन का एक यादगार और गौरवपूर्ण समय रहा है। जीवन के इस मोड़ पर मैंने रेलवे सेवा से अपना व्यागावृत्त रेलवे के सक्षम अधिकारियों को सौंप दिया है। मैं भारतीय रेलवे परिवार की सर्व आगारी रहूंगी।

-विनेश फोगट, रेललार

पर्यावरण को स्वच्छ रखें

अमृता फड़नवीस और दिव्य फाउंडेशन की एक अतिरसनीय पहल! नीं कदवा करनार नही! अभियान हम सभी को इस गोपेय चतुर्षी पर अतिरसनीय और जागरूक होने की याद दिलाता है। अइए सुनिश्चित करे कि हम अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखें।

-बोमन इरानी, अभिनेता

संक्षेप

स्वास्थ्य व स्वच्छता के लिए किशोरियों को किया गया जागरूक

अमन लेखनी समाचार
शुक्लामंज, उन्नाव। सीताराम कॉलोनी स्थित द्वारिका मोहिनी हायर सेकेंड्री स्कूल में कार्यक्रम का उद्देश्य किशोरियों को स्वास्थ्य और स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूक करना था। किशोरी स्वास्थ्य मंच के तहत छात्राओं को न केवल स्वास्थ्य संबंधित मुद्दों पर जानकारी दी गई, बल्कि उन्हें दैनिक जीवन में स्वस्थ रहने के टिप्स भी प्रदान किए गए। स्वास्थ्य कर्मियों की टीम में सिकंदरपुर सरोसी के डॉ. आशीष सचान, डॉ. विनीता वर्मा, सिद्धार्थ बाजपेई, और प्रमोद सिंह शामिल थे। इन विशेषज्ञों ने किशोरियों को स्वास्थ्य, पोषण, और स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में छात्राओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया, जिनमें स्वास्थ्य और स्वच्छता से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने की चुनौती शामिल थी। यह गतिविधियां छात्राओं के बीच स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित की गईं। इस अवसर पर स्वास्थ्य कर्मियों ने किशोरियों को स्वच्छता के महत्व, संतुलित आहार, और नियमित स्वास्थ्य जांच की आदतें अपनाने की सलाह दी। इसके साथ ही, उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रकाश डाला और छात्राओं को तनाव प्रबंधन की तकनीकों के बारे में बताया। किशोरी स्वास्थ्य मंच ने विद्यालय की छात्राओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने और उन्हें स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह कार्यक्रम विद्यालय प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग के बीच सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण साबित हुआ।

अमरोहा में तेंदुए ने गौवश को बनाया निवाला

अमरोहा, अमरोहा जिले में पिछले कुछ महीनों से तेंदुए की गतिविधियां बढ़ गई हैं, जिसके चलते ग्रामीणों में देहशत का माहौल बन गया है। तेंदुआ जिले के विभिन्न गांवों में दिखाई दे चुका है, लेकिन वन विभाग अब तक उसे पकड़ने में सफल नहीं हो पाया है। बीती रात तेंदुए ने डिंडौली थाना क्षेत्र में एक छुट्टा गाय को मार डाला। आज सुबह खेत में गाय के अवशेष मिले, जिसके बाद ग्रामीणों ने पुलिस को सूचित किया। इसके अलावा, डिंडौली गांव में किसान राजवीर की पत्नी सर्वेश ने भी तेंदुए को देख लिया और इसकी वजह से बेहोश हो गईं। पिछले कई महीनों से तेंदुए की आहत जिले के कई गांवों में सुनाई दे रही है। तेंदुआ मंडी धनौरा, नौगांवा सादात, अमरोहा देहात, रजबपुर और डिंडौली इलाकों में दिखाई दे चुका है। इस स्थिति के चलते ग्रामीणों ने गुट बनाकर खेतों में जाना शुरू कर दिया है और रात में घरों के अंदर सोने को मजबूर हैं। वन विभाग ने तेंदुए को पकड़ने के लिए कई प्रयास किए हैं। डीएफओ एसपी सिंह ने बताया कि तेंदुए की गतिविधियों के आधार पर टीमों को विभिन्न इलाकों में भेजा गया है और कई स्थानों पर पिंजरे लगाए गए हैं। विभाग की कोशिश है कि जल्द से जल्द तेंदुए को पकड़ा जाए ताकि ग्रामीणों को सुरक्षित किया जा सके। ग्रामीणों की चिंताएं बढ़ गई हैं।

विभिन्न समस्याओं को लेकर पूर्व विधायक ने एसडीएम को सौपा झापन

अमन लेखनी समाचार

कैसरगंज, बहराइच। विधानसभा कैसरगंज की विभिन्न समस्याओं को लेकर समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक रामतेज यादव ने पार्टी के अन्य पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर नव सूत्रीय मांगों का एक झापन एसडीएम आलोक प्रसाद को सौपा। जिसमें जनसमस्याओं और किसानों से जुड़ी समस्याओं पर त्वरित कार्रवाही की मांग की गई। पूर्व विधायक रामतेज एडवोकेट, फरीद अहमद, हंसराम यादव, सतीश कुमार यादव एडवोकेट समेत अन्य पार्टी पदाधिकारियों ने एसडीएम को झापन सौंपते हुए प्रमुख मांगें रखीं। प्रमुख मांगों में सोलर लाइट की व्यवस्था, जर्जर सड़कों का पुनर्निर्माण, सहित घाघरा नदी कटान से प्रभावित परिवारों को आवासीय भूमि और



कृषि मुआवजा दिलाने की मांग की गई इसके अलावा खाद-बीज की कालाबाजारी रोकने और किसानों को सस्ते दर पर कीटनाशक उपलब्ध कराने, छुट्टा पशुओं से फसल नुकसान पर मुआवजा, जातीय और धार्मिक भेदभाव पर रोक, बुजुर्गों

और महिलाओं के लिए पेंशन, बेरोजगारी भत्ता, और पुलिस उत्पीड़न व भ्रष्टाचार पर रोक की भी मांग की गई है। इसके अलावा प्रशासन से रेवेली आदमपुर बांध के विस्थापितों के पुनर्वास को व्यवस्था सुनिश्चित करने की अपील की गई।

पांचवा भेड़िया वन विभाग के पिंजरे में हुआ कैद, ग्रामीणों को मिली राहत

इन जालिमों के कहर ने शासन प्रशासन की उड़ाई नींद, डबल अलर्ट मोड में आया प्रशासन

अमन लेखनी समाचार

शिवपुर, बहराइच। महिला सहित कई बच्चों की मौत व दर्जनों लोगों को घायल करने वाले कातिल एक-एक करके वन विभाग के पिंजरे में कैद हो रहे हैं। आवाग के लिए आतंक का पर्याय बने एक और भेड़िया वन विभाग के पिंजरे में कैद हुआ। उसे रेंज कार्यालय लाया गया है। एक और भेड़िया के पकड़े जाने से वन विभाग के साथ गांव के लोगों ने राहत की सांस ली है। जनपद बहराइच के महसी तहसील अंतर्गत ग्राम पंचायत सिसैया चूड़ामणि गांव में वन विभाग ने खुनी भेड़ियों को पकड़ने के लिए पिंजरा और जाल लगाया था। मंगलवार 10 सितम्बर को सुबह छह बजे के बाद एक भेड़िया जाल में फंस गया। इसके बाद वह



पिंजरे में कैद हो गया। उसे वनकर्मियों ने कब्जे में लिया। इसके बाद रेंज कार्यालय लेकर आए। डीएफओ अजीत प्रताप सिंह ने बताया कि एक भेड़िया पिंजरे में कैद हुआ है। उसे रेंज कार्यालय लाया जा रहा है। डिप्टी रेंजर दीपक सिंह ने बताया कि भेड़िया मादा है। उसकी उम्र पांच वर्ष के आसपास है। तथ्या चार भेड़िये मृत में एक आज कुल पांच भेड़िया पकड़े जा चुके हैं। इनमें एक भेड़िये की मौत हो चुकी है। अभी भी मिशन भेड़िया में लगाई गई समस्त टीमों के द्वारा काफी परिश्रम से विभिन्न उपकरणों सहित लगातार सर्च अभियान जारी है, शेष भेड़ियों को जल्द ही पकड़ लिया जाएगा।

तालाब में फल तोड़ने गई चार बालिकाओं की डूबकर कर मौत, गांव में मचा कोहराम

अमन लेखनी समाचार

बहराइच। जनपद के नवाबगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत सतीजोर गांव में स्थित तालाब में डूबकर चार बालिकाओं की मौत हो गई। जिससे गांव में हड़कंप मच गया। सभी के शव तालाब से बरामद कर लिए गए। मामला नवाबगंज थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत सतीजोर का है। गांव के बाहर स्थित तालाब में बेली फल लगा हुआ है। जिसे तोड़ने के लिए मंगलवार सुबह लगभग 9:30 बजे गांव निवासी महक (14) पुत्री कालीन खान गईं तभी अचानक महक तालाब में डूबने लगी। इसी दौरान महक को बचाने के लिए आयी सावित्री (10) पुत्री इशरत, साइबा (10) पुत्री मेराज और सरिकुल



घटना की सूचना मिलते ही एसडीएम अश्विनी कुमार पांडेय, सीओ नानपारा और थानाध्यक्ष शीला यादव भी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचीं। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है वहीं शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

हापुड़ में लोन के नाम पर धोखाधड़ी

सिंहावली पुलिस ने गिरोह के 2 सदस्य गिरफ्तार किए, बरामद की गई नकदी और दस्तावेज

अमन लेखनी समाचार



जाने का मैसैज मिला। बैंक जाकर जांच की तो पता चला कि आरोपियों ने चेक में एडिटिंग कर धोखाधड़ी से पैसे निकाल लिए थे। सिंहावली पुलिस ने गिरोह के दो सदस्यों, जिला बलिया के मित्रोलिया गांव निवासी पीयूष शुक्ला और प्रयागराज के हल्ला फार्म डाडी डभावा रिवा निवासी अमर सिंह को गंगा एक्सप्रेस-वे के पास से गिरफ्तार किया।

आरोपियों ने पुलिस को बताया कि वे भोले-भाले लोगों को लोन दिलाने के नाम पर चेक लेते थे और मैजिक पेन से चेक में एडिटिंग करके राशि बदल देते थे। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से मैजिक पेन, पासबुक, पेन कार्ड, सिम कार्ड, फोन, चेकबुक, आईडी, आधार कार्ड, लोन फार्म और 1550 रुपए नकद बरामद किए हैं।

डीएम व सीडीओ ने पोषण रैली को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। राष्ट्रीय पोषण माह, सितम्बर 2024 (01 सितम्बर से 30 सितम्बर 2024 तक) के उपलक्ष्य में मुख्य विकास अधिकारी/जिलाधिकारी महोदय के द्वारा पोषण रैली को हरी झंडी दिखाते हुए जिलाधिकारी कार्यालय, कलेक्ट्रेट परिसर से रवाना किया गया। दिनांक 01 सितम्बर से 30 सितम्बर 2024 तक राष्ट्रीय पोषण माह मनाया जा रहा है। इस अभियान की मुख्य थीम एनीमिया 3T (टेस्ट, ट्रीट, टॉक), वृद्धि निगरानी, ऊपरी आहार, पोषण भी पढ़ाई भी एवं बेहतर प्रशासन के लिए प्रोद्योगिकी है। जिलाधिकारी द्वारा पोषण शपथ दिलाई गयी। जिलाधिकारी द्वारा छोटे बच्चों एवं किशारियों को उपहार भेंट किया गया तथा मोटे अनाज को बढ़ावा देने वाली पोषण तश्तरी, पोषण को बढ़ावा देने व प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से बनाई गई पोषण टोपी, कुपोषित बच्चों के खान-

पान व पोषक आहार को बढ़ावा देने के लिए पोषण डलिया आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों द्वारा जिलाधिकारी को भेंट स्वरूप दी गई। जिलाधिकारी द्वारा सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रों के कार्यों के जोश की सराहना करते हुए पोषण व उसकी आवश्यकता को जन-जन तक पहुंचाने तथा पोषण को जीवन शैली का हिस्सा बनाने के लिए पूरे पोषण माह में प्रयास करने के लिए सभी को निर्देशित किया गया, यह रैली जिलाधिकारी कार्यालय, कलेक्ट्रेट परिसर-अम्बेडर पार्क (तिकाना पार्क)-एस0पी0 ऑफिस-त्रिपाठी बिल्डिंग से पी0डब्लू0डी0 निरीक्षण भवन, तक निकाली गई। उक्त के उपलक्ष्य में बाड़ी संख्या में आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री सहायिका के साथ जिला कार्यक्रम अधिकारी राकेश कुमार मिश्र, समस्त 16 ब्लॉकों व शहर उपलक्ष्य में 17 बाल विकास परियोजना अधिकारियों के साथ विभाग के अन्य कर्मचारियों द्वारा रैली में प्रतिभाग किया।

नवागंतुक एसएसबी प्रभारी ने स्थानीय पत्रकारों से की प्रेस वार्ता

क्षेत्र की हासिल की जानकारी और किया विचार विमर्श

अमन लेखनी समाचार

रूपईडीहा, बहराइच। नवागंतुक एसएसबी प्रभारी सत्येंद्र सिंह ने रूपईडीहा बीओपी का पदभार ग्रहण करने के बाद मंगलवार को एसएसबी कैम्प में क्षेत्र के पत्रकारों से प्रेस वार्ता की। इसके साथ ही उन्होंने रूपईडीहा क्षेत्र की जानकारी हासिल की एवं विचार विमर्श किया। पत्रकारों ने सीमा क्षेत्र में हो रही परेशानियों के बारे में निरीक्षक को

जानकारी देते हुए बताया की सीमा पर दोनों देशों के नागरिकों को आवागमन में बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। खास कर एसएसबी चेकपोस्ट से सीमा तक जाने के लिए बीच में जो खाली जगह है उसमें पैदल चलना पड़ता है जिससे बच्चों और वरिष्ठ नागरिकों को बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इस पर निरीक्षक ने जानकारी देते हुए बताया की सीमा पर जो गेट बन रहा है इसके बनते ही इस तरह के अधिकतर समस्याओं का समाधान हो जाएगा। चर्चा करते हुए

सत्येंद्र सिंह ने कहा कि पत्रकार और सरकारी विभाग एक दूसरे के पूरक हैं। आप हमको आइना दिखाने का काम करते हैं जिससे हम जागरूक रहते हैं। इस मीटिंग में रूपईडीहा चेकपोस्ट पर तैनात निरीक्षक सत्येंद्र सिंह, शिवपुरा चेकपोस्ट पर तैनात ईंचार्ज सतीश कुमार, रूपईडीहा पत्रकार संघ के संरक्षक शेर सिंह कशोधन, उपाध्यक्ष इरशाद हुसैन, कोषाध्यक्ष अमित मदेशिया, सदस्य अंकित अग्रवाल, मनोमरा शर्मा, नीरज बरनवाल आदि पत्रकार शामिल रहे।

ग्रामवासियों की जन जागरूकता के लिए संचालित किया जा रहा जन संवाद

अमन लेखनी समाचार/संतोष मिश्रा

बहराइच। मानव-वन्य जीव संघर्ष की बढ़ती संख्या व अन्य कारणों से वन्य जीवों के आबादी क्षेत्रों में जाने की घटनाओं में हो रही बढ़ावरी के दृष्टिगत कर्तव्यनिष्ठा घाट वन्य जीव प्रभाग के वनक्षेत्र से लगे ग्रामीण इलाकों में जन सामान्य से समन्वय स्थापित कर उन्हें जागरूक किये जाने विषयक ह्यहजन संवाद अभियान कार्यक्रमह्यह के अन्तर्गत दिनांक 10 सितंबर को मोतीपुर रेंज के खंडिया व मुर्तिहा रेंज के सेमरीघटडी, गोलहना, सलापुर, घुमनाभारू एवं निशानगाड़ा रेंज के रमपुरवा गांवों में ग्राम प्रधान व ग्रामीणों की उपस्थिति में वन अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा गोष्ठी का आयोजन कर वन्य जीवों के हमले से बचाव हेतु सुझाव दिया गया कि कृषि कार्य हेतु कृषक समूह में खेतों में जाएं तथा छोटे बच्चों को साथ न ले जाएं। सूर्यास्त के बाद कृषि कार्य हेतु खेतों में न जाएं। शौच आदि के लिए शौचालय का प्रयोग करें, खुले में शौच न जाएं। घर के बाहर खुले में न सोयें। छोटे बच्चों को सूर्यास्त के पश्चात खुले में खेलने न दें। वन्य जीव देखे जाने पर स्थानीय वन चौकी, रेंज कार्यालय एवं पुलिस को सूचना दें।

राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ जिला कार्य समिति का हुआ विस्तार



सजल मिश्रा बने जिला संयुक्त मंत्री

अमन लेखनी समाचार

बाबागंज, बहराइच। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ जनपद बहराइच के जिलाध्यक्ष आनन्द मोहन मिश्र के द्वारा विकास खंड नवाबगंज के ब्लॉक संयुक्त महामंत्री सजल मिश्र को रिक्त पद के सापेक्ष जिला संयुक्त मंत्री के पद का

दायित्व प्रदान करते हुए मनोनयन पत्र दिया गया इस अवसर पर जिला महामंत्री उमेश चन्द्र त्रिपाठी ने महासंघ की रीति-नीति से अवगत कराया। जिला वरिष्ठ पंजज कुमार वर्मा, जिला संयुक्त महामंत्री विनोद कुमार त्रिपाठी के द्वारा नवनिर्वाचित जिला पदाधिकारी को माल्यापूर्ण एवं मिठाई खिलाकर बधाई दी गई। इस अवसर पर समस्त जिला कार्यसमिति के पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

तेज रफ्तार ट्रक ने मारी टक्कर, युवक की हुई मौत



अमन लेखनी समाचार

रूपईडीहा, बहराइच। थानाक्षेत्र के रूपईडीहा के जैतापुर चौराहे पर तेज रफ्तार ट्रक ने एक व्यक्ति को ठोकर मार दी जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक स्थानीय लोगों ने बताया है कि युवक साइकिल बनवाने आया था साइकिल बनवा कर घर वापस जा रहा था तभी रूपईडीहा से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने 24 वर्षीय राजकुमार मिश्रा पुत्र लल्लू राम

निवासी ग्राम पंडित पुरवा मुरलीधर ददौली को ठोकर मार दी। ठोकर इतनी तेज थी कि व्यक्ति मौके पर ही मार्ग पर गिर गया और उसके सर में काफी चोट आई जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। वहीं ट्रक चालक ट्रक सहित मौके से फरार हो गया। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस के द्वारा पहुंचकर घटना की पूरी जांच पड़ताल की गयी तथा शव को पोएम के लिए भेज दिया गया है। रूपईडीहा पुलिस आगे की वैधानिक कार्रवाई में जुट गई है।

परिषदीय शिक्षकों का चार दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

प्रशिक्षण में दी गई एनसीईआरटी

आधारित नवीन पाठ्य पुस्तकों की जानकारी

प्रशिक्षण में सिखाई गई नवीन पाठ्य पुस्तकों के शिक्षकों की बारीकियां

अमन लेखनी समाचार

बाबागंज, बहराइच। विकास क्षेत्र नवाबगंज अंतर्गत परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों व शिक्षामित्रों का



चार दिवसीय प्रशिक्षण ब्लॉक संसाधन केंद्र नवाबगंज (बाबागंज) में आयोजित किया गया। खंड शिक्षा अधिकारी राधेश्याम वर्मा के निर्देशन में आयोजित इस चार दिवसीय प्रशिक्षण में संदर्भदाता सुनील कुमार, राकेश मौर्य, निर्मल शुक्ला, जितेंद्र बहादुर व अमित कुमार ने शिक्षकों को एनसीईआरटी आधारित नवीन पाठ्य

पाठ्यक्रम पर आधारित भाषा- गणित व अंग्रेजी की नवीन पाठ्य पुस्तकों सारंगी, आनंदमय गणित व मृदंग की विषयवस्तु तथा कक्षा 3, 4 व 5 में संदर्शिका आधारित भाषा-गणित शिक्षण की नीतियों की जानकारी दी गई। दो बैच में आयोजित इस प्रशिक्षण में 100 शिक्षकों व शिक्षामित्र ने प्रतिभाग किया।

गणेश पूजा महोत्सव मे सम्मानित किये पुलिस क्षेत्राधिकारी व कोतवाल

अमन लेखनी समाचार

कैसरगंज, बहराइच। कैसरगंज के हुजरपुर रोड पर हनुमान मंदिर के निकट आयोजित श्री गणेश पूजन महोत्सव के मे क्षेत्राधिकारी अनिल कुमार सिंह व प्रभारी निरीक्षक राजनाथ सिंह ने पुलिस कर्मियों के साथ श्विचिंत पूजा-अर्चना किया और



भगवान गणेश का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस धार्मिक आयोजन में क्षेत्र के प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति ने माहौल को और भी विशेष बना दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान गणेश की पारंपरिक पूजा से हुई, जिसके बाद श्रद्धालुओं ने भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस मौके पर समिति के सदस्यों ने क्षेत्राधिकारी और थाना प्रभारी का अंग वस्त्र भेंट कर सम्मान किया। समारोह में समिति के सदस्यों ने पुलिस प्रशासन के सहयोग और सुरक्षा व्यवस्था के लिए आभार व्यक्त किया। अपने संबोधन में क्षेत्राधिकारी अनिल कुमार सिंह और थाना प्रभारी राजनाथ सिंह ने इस तरह के धार्मिक आयोजनों के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि ये समाज में आपसी भाईचारे, शांति और सौहार्द को बढ़ावा देते हैं। कार्यक्रम का समापन भगवान गणेश की आरती और प्रसाद वितरण के साथ हुआ, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया। इस मौके पर ब्लॉक प्रमुख सदीप सिंह विसन, पूर्व प्रधान कौशलेंद्र चौधरी, भाजपा मंडल अध्यक्ष शिव सहाय सिंह, राजू रेडोमेड, हरिद्वारी प्रसाद गुप्ता, संजय पाठक, अमरीश गुप्ता पंकज कुमार सिंह, महेश गुप्ता, सहित सैकड़ श्रद्धालु मौजूद रहे।

ऑपरेशन ईगल में तीन स्मैक तस्कर गिरफ्तार

60 ग्राम स्मैक और 3 बाइक बरामद, 6 लाख रुपए है कीमत

अमन लेखनी समाचार

बांदा, बांदा में चलाए जा रहे ऑपरेशन ईगल के तहत पुलिस ने स्मैक की तस्करी करने वाले गिरोह के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपियों के पास से 60 ग्राम स्मैक, जिसकी कीमत छह लाख रुपये बताई जा रही है। और तीन बाइकें बरामद की गई हैं। डीएसपी राजीव प्रताप सिंह के अनुसार, पुलिस को सूचना मिली थी कि कुछ लोग नरैनी रोड स्थित बांदा विकास प्राधिकरण मैदान के पास स्मैक की बिक्री करने की योजना बना रहे हैं। इस पर कोतवाली नगर और एसओजी की संयुक्त टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए



तीन आरोपियों को घर दबोचा। गिरफ्तार आरोपियों में जालौन जनपद के रेंडर थाना क्षेत्र के ढंजा गांव निवासी अनीश अहमद, हमीरपुर के परक्षा गांव निवासी इरहाक और बिसंडा थाना क्षेत्र के गाड़व गांव निवासी गुलाब कोरी शामिल हैं। पुलिस ने बताया कि इन आरोपियों का स्मैक का कारोबार अंतरराज्यीय स्तर पर फैला हुआ था।

से 60 ग्राम स्मैक और तीन बाइकें जब्त की हैं। सभी तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है और मामले की आगे की जांच जारी है। पुलिस ने बताया कि इन आरोपियों का स्मैक का कारोबार अंतरराज्यीय स्तर पर फैला हुआ था।

संक्षेप

लापता युवक का नहीं चल सका पता

अमन लेखनी समाचार

बिंदकी, फतेहपुर। उत्तर प्रदेश के जनपद फतेहपुर के बिंदकी तहसील के अंतर्गत तेंदुली गांव से एक युवक राजकुमार मिश्र पुत्र दिलीप मिश्र उम्र 50 वर्ष सोमवार को सुबह से घर से कहीं चले गए जब देर रात वह घर नहीं आए तो परिजनों ने खोजबीन प्रारंभ कर दी लेकिन कोई पता नहीं चला राजकुमार मिश्र के पता न चलने पर परिजन चिंता में पड़ गए हैं जिससे परिजनों ने मंगलवार को कोतवाली बिंदकी में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई जिस पर पुलिस ने परिजन की रिपोर्ट के आधार पर खोजबीन आरंभ कर दी और परिजन फिर से खोजबीन में लग गए हैं।

मकान मालिक और अस्पताल संचालक में मारपीट

सीतापुर, सीतापुर में निजी भवन में चल रहे एक अस्पताल के डॉक्टर और मकान मालिक के बीच जमकर मारपीट हो गई। अस्पताल परिसर के अंदर दोनों पक्षों के बीच हुई मारपीट का वीडियो वहां लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गया। इस मारपीट की वजह निजी भवन में चल रहे अस्पताल के किराए को लेकर बताया जा रहा है। पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे की फुटेज को कब्जे में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है। मामला लहरपुर कोतवाली इलाके का है। यहां सीओ लहरपुर कार्यालय के सामने मोहल्ला ठठेरी टोला में एक घर में निजी चिकित्सालय एपेक्स हॉस्पिटल का संचालन किया जा रहा था। बताया जाता है कि इस दौरान मकान मालिक सदाकत अली का अस्पताल के चिकित्सकों के बीच मकान के किराए को लेकर विवाद होने लगा। दोनों पक्षों के भी बीच विवाद इस कदर बढ़ा कि अस्पताल परिसर के अंदर ही मरीजों के सामने दोनों पक्षों में जमकर मारपीट हो गई। इस मारपीट के बाद मकान मालिक ने अस्पताल में मरीजों को अंदर ही बंद करके तरह ताला डाल दिया। अस्पताल में भर्ती मरीज के अंदर बंद होने के बाद डॉक्टर ने मामले की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने मकान मालिक को किसी तरह समझ कर मामला शांत कराया और अस्पताल का गेट खुलवाकर मरीज को निकलवाया। पुलिस ने अस्पताल में लगे सीसीटीवी कैमरे को डीवीआर की भी अपने कब्जे में लेकर मामले की जांच पड़ताल शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि दोनों पक्षों के तहरीर पर केस दर्ज कर आवश्यक विधिक कार्रवाई की जायेगी।

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। क्षेत्रीय महामंत्री व क्षेत्रीय विधायक प्रदीप शुक्ला ने मंगलवार को सहजनवा विधानसभा क्षेत्र के ब्लॉक सहजनवा जौनिहां में आरडी पब्लिक स्कूल विद्यालय जाने हेतु कुल लागत 3.310 लाख का सीसी रोड का लोकार्पण एवं युक्षारोपण किया। कार्यक्रम संबोधित करते हुए विधायक प्रदीप शुक्ला ने कहा कि आज मोदी योगी नेतृत्व में गांव से लेकर शहर और देश तेजी से विकास कर रहा है। देश की जनता को स्वास्थ्य शिक्षा सड़क बिजली समेत अन्य सुविधाएं बेहतर रूप से मिल रही है। इस अवसर पर क्षेत्रीय महामंत्री प्रिछड़ा मोचां मनोज सिंह, अशोक यादव, बलवंत यादव अजीत कुमार, सांसद प्रतिनिधि अनुराग मिश्रा आदित्य मिश्रा, अंशु त्रिपाठी, विद्यालय परिवार समेत लोग उपस्थित रहे।

पोषण माह के अंतर्गत ग्राम पंचायत सेवई, विकास खंड पिरौली में विज एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। पिपरोली ब्लॉक अंतर्गत आज दिनांक 10 सितंबर 2024 को ग्राम पंचायत सेवई में मुख्य सेविका श्रीमती उषा रानी के नेतृत्व और रफउ-ट से अनूप त्रिपाठी के सहयोग से आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों के लिए विजय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समुदाय में पोषण के प्रति जागरूकता फैलाना था। इसके साथ ही, सामुदायिक जागरूकता हेतु एक पोषण रैली का भी आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय लोगों की भागीदारी रही। स्वच्छता और स्वास्थ्य के महत्व को ध्यान में रखते हुए, हेल्थ डॉक्टर दीदी जिला कार्यक्रम समन्वयक श्री अरविंद जी ने हाथ धुलाई की तकनीक के बारे में विस्तार से जानकारी दी। और महिला

गोरखपुर। पिपरोली ब्लॉक अंतर्गत आज दिनांक 10 सितंबर 2024 को ग्राम पंचायत सेवई में मुख्य सेविका श्रीमती उषा रानी के नेतृत्व और रफउ-ट से अनूप त्रिपाठी के सहयोग से आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों के लिए विजय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समुदाय में पोषण के प्रति जागरूकता फैलाना था। इसके साथ ही, सामुदायिक जागरूकता हेतु एक पोषण रैली का भी आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय लोगों की भागीदारी रही। स्वच्छता और स्वास्थ्य के महत्व को ध्यान में रखते हुए, हेल्थ डॉक्टर दीदी जिला कार्यक्रम समन्वयक श्री अरविंद जी ने हाथ धुलाई की तकनीक के बारे में विस्तार से जानकारी दी। और महिला

आधुनिक खेती के लिए प्रशिक्षित हुए होनहार किसान

अमन लेखनी समाचार/शोभित शुक्ला

फतेहपुर। नमामि गंगे जैविक खेती योजना के अंतर्गत एक्सपोजर विजिट के तहत कानपुर नगर के कृषि विभाग के नेतृत्व में दो सैकड़ किसानों को प्रशिक्षित किया गया जैविक खाद आधारित उन्नत खेती एवं औद्योगिक इकाइयों की विस्तृत जानकारी दी गई अमौली विकासखंड क्षेत्र अंतर्गत गौरीपुर में संचालित खेत किसान प्रो कंपनी लिमिटेड में आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में कानपुर नगर के कृषि विभाग के नेतृत्व में नमामि गंगे योजना खेती योजना के अंतर्गत एक्सपोजर विजिट के तहत सरसौल बिल्हौर शिवराजपुर चौबेपुर समेत नगर के विभिन्न विकास खंडों से आये लगभग दो सैकड़ किसानों को प्रशिक्षित किया गया प्रशिक्षक ललित देवी मनमोहन प्रमोद तिवारी समेत अन्य प्रशिक्षकों के द्वारा उन्नत एवं जैविक खाद आधारित तकनीकी कृषि की विस्तृत जानकारी दी इस दौरान खेत किसान प्रोडक्ट कंपनी के

ग्राम सचिवालय व आंगनबाड़ी केंद्र का फीता काट कर किया गया उद्घाटन

अमन लेखनी समाचार

सहजनवा, गोरखपुर। सहजनवा तहसील अंतर्गत विकासखंड पाली क्षेत्र स्थित के ग्राम पंचायत कूवाबार के राजस्व ग्राम मेहरकुण्डल व कूवाबार के प्राथमिक विद्यालय परिसर में स्थित ग्राम सचिवालय के 19.5 लाख व आंगनबाड़ी केंद्र के 12-12ला लागत से बने भवन का मंगलवार को ग्राम प्रधान व मुख्य सेविका बाल विकास के मौजूदगी में बीडीओ पाली बुजेश यादव जी ने ग्राम सचिवालय व आंगनबाड़ी केंद्र भवन का विधि, विधान से फीता काट कर उद्घाटन किया। उद्घाटन के दौरान बीडीओ पाली ने कहा कि ग्राम पंचायत में सचिवालय भवन हो जाने से ग्राम पंचायत के लोगों को सरकार द्वारा चलाए गए योजनाओं की सभी जानकारीयें अब गांव के सचिवालय पर रोजगार सेवक व कर्मयूटर



आपरेटर जो नियुक्त हैं उन्हीं के द्वारा जन्म, मृत्यु, प्रमाण पत्र, वृद्धा, विधवा, विकलांग पंशन, राशन कार्ड, आवास तथा विकास सम्बंधित सभी जानकारी ग्राम सचिवालय से ही मिल जाएंगे। तथा आंगनबाड़ी केंद्रों पर ग्राम पंचायत के तीन वर्ष से छह वर्ष के शिक्षा से पूर्व ग्राम पंचायत के बच्चों को प्राथमिक विद्यालय में दाखिले के लिए तैयार कर देती हैं। गांव में सचिवालय भवन होने से ग्रामीणों को ब्लॉक मुख्यालय पर आने की जरूरत नहीं पड़ेगी। वहीं बहुप्रतीक्षित प्रधानमंत्री आवास योजना

की खुली बैठक का आयोजन एडीओ पंचायत की मौजूदगी तथा ग्राम प्रधान प्रेमचन्द यादव की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना 2024 के सम्बन्ध में उपस्थित ग्रामवासियों को विस्तृत रूप से बताया गया। इस कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य राम प्रताप यादव उर्फ आर पी बाबू, एडीओ पंचायत धर्मेन्द्र कुमार, एडीओ कृषि ध्रुव कुशवाहा, जिला एपीओ सुधांशु शाह, अवधेश वर्मा, पुरुषोत्तम चौबे, टडवा कला प्रधान प्रतिनिधि मुनीश यादव, पूर्व प्रधान घुरियाचर कपिल देव यादव, सचिव आनन्द वरुण, पूर्व सचिव वीरेंद्र चौधरी, मुख्य सेविका उषा मौर्य, विकास यादव, पूर्व प्रधान रविन्द्र यादव, उषेंद्र यादव, समीर, अविनाश यादव, श्यामराज, चतुर्भुजा, पिंढू गौतम, रामचन्द्र, अनिल, समेत सैकड़ों ग्रामवासी मौजूद रहे।

प्रदीप शुक्ला ने किया विकास कार्यों का लोकार्पण



अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवा कस्बे में स्थित मुरारी इंटर कालेज के परिसर में 68वीं जनपदीय जूडो प्रतियोगिता का आयोजन मंगलवार को किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुरारी इंटर कालेज के प्रधानाचार्य मेजर साकेत जी ने प्रतिभागियों का आपस में हाथ मिला कर किया। वहीं इस जूडो प्रतियोगिता में 14 वर्ष, 17 वर्ष, 19 वर्ष

जनपदीय जूडो प्रतियोगिता का हुआ आयोजन, प्रतिभागियों ने दिखाया कौशल

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवा कस्बे में स्थित मुरारी इंटर कालेज के परिसर में 68वीं जनपदीय जूडो प्रतियोगिता का आयोजन मंगलवार को किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुरारी इंटर कालेज के प्रधानाचार्य मेजर साकेत जी ने प्रतिभागियों का आपस में हाथ मिला कर किया। वहीं इस जूडो प्रतियोगिता में 14 वर्ष, 17 वर्ष, 19 वर्ष

वृक्ष कटान को लेकर दर्ज हुई एफआईआर

अमौली, फतेहपुर। उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जनपद के जाफरगंज थाना क्षेत्र के अंतर्गत वन विभाग के अधिकारियों को मिली सूचना के आधार पर ग्राम पोस्ट बसंत खेड़ा थाना जाफरगंज बिंदकी फतेहपुर में अपने हमराही विकास मिश्र वन दोगा के साथ जाकर देखा तो सरस्वती ज्ञान मंदिर गोधैया पोस्ट बसंतखेड़ा थाना जाफरगंज के पीछे राकेश यादव पुत्र ननकू ग्राम गोधैया पोस्ट बसंत खेड़ा थाना जाफरगंज फतेहपुर खेत में खड़े सागौन के 59 वृक्षों को काटकर ले गए ग्रामीणों से पृष्ठछाछ में पता चला कि उक्त वृक्षों को सत्यम पुत्र छोटेलाल निवासी जवाहरपुर पोस्ट बिजुरी थाना बकेवर फतेहपुर और गौरव मिश्रा पुत्र कुष्णा मिश्रा निवासी व पोस्ट बकेवर थाना बकेवर फतेहपुर ने काटा है और 59 भागी पेड़ लकड़ी ले गए यह भी बताया कि वृक्षों को बिना सक्षम अधिकारी की अनुमति के काटना उत्तर प्रदेश वृक्ष संरक्षण अधिनियम 1976 की धारा 4 व 10 के तहत अपराध है इसके लिए वन विभाग द्वारा उक्त धारा के तहत कानून से आवश्यक कार्यवाही के लिए अपील की गई है

गोल्ड मेडल मिले, विजेता प्रतिभागी अब 14 सितंबर को महाराजगंज जनपद में आयोजित होने वाले मंडलीय आयोजन में प्रतिभाग करेगा। इस दौरान शारीरिक शिक्षक शैलेंद्र प्रताप, हर्देश रावत, शंभुनाथ, जयप्रकाश, शशि प्रभा, प्रीति पाल शक्ति पांडे, आलोक श्रीवास्तव, अमीरुद्दीन अंसारी, मंडलीय खेल सचिव डा० ए. राय सहित अन्य लोग मौजूद रहे।



के बालकछाबालिका वर्ग से गोरखपुर जनपद से कुल 29 प्रतिभागियों ने अपना कौशल दिखाया। प्रतियोगिता में सहजनवा को कुल 17 गोल्ड मेडल मिले, और महानगर को कुल 05

खेड़छाड़ का विरोध करने पर आरोपी दौड़ा दौड़ा कर पीटा

गोरखपुर। कस्बा के एक वार्ड निवासी किशोरी से एक मुस्लिम समुदाय का युवक खेड़छाड़ करता है। विरोध करने पर आरोपित ने किशोरी के स्वजन को साथीयों के साथ मिल कर दौड़ा दौड़ा कर पीटा। आपास के लोगों के इकट्ठा होने पर आरोपित फरार हो गए। पीड़िता के तरफ से थाने में तहरीर दी गई है लेकिन केस दर्ज नहीं किया गया है। सहजनवा नगर पंचायत के एक वार्ड में एक परिवार रहता है। रास्ता में वार्ड के एक व्यक्ति की चाउमीन की दुकान है, जिसपर बस्ती जिले का निवासी एक मुस्लिम समुदाय का युवक काम करता है। आरोप है कि युवक आए दिन घर की किशोरी को खेड़छाड़ है और फजियां कसता है। दुकान मालिक से शिकायत करने के बाद भी आरोपित मान नहीं रहा है। मंगलवार को सुबह किशोरी सड़क से गुजर रही थी तो आरोपित फड़ने लगा। किशोरी ने स्वजन को बताया तो वह शिकायत करने पहुंच गए। आरोप है कि शिकायत से नाराज आरोपित ने बस्ती से कुछ युवकों को बुला कर घर पर चढ़ आए और दौड़ा दौड़ा कर पीटने लगे। घर के लोगों को बाहरी युवकों के पीटते देख मोहल्ले के लोगों ने दौड़ाया तो आरोपित भाग खड़े हुए। किशोरी की मां ने आरोपित के खिलाफ तहरीर दी है लेकिन मुकदमा नहीं दर्ज किया गया है।

फिर से भाजपा को विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बनाने को कार्यकर्ता तैयार - युधिष्ठिर सिंह

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। प्रत्येक बूथों पर कम से कम 200 सदस्य हर हाल में बनाये जायेंगे, उक्त बातें बतौर मुख्य अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष युधिष्ठिर सिंह ने सहजनवा में विशेष सदस्यता अभियान की तैयारी बैठक करते हुए कही। उन्होंने कहा कि 11 सितम्बर से 17 सितम्बर तक विशेष सदस्यता अभियान चलाकर सदस्य बनाना है। उन्होंने सभी मण्डल अध्यक्षों को निर्देशित किया कि अपने-अपने मण्डलों में बैठक कर बूथों पर विशेष सदस्यता अभियान चलाने की योजना रचना तैयार कर लें। उन्होंने कहा कि 11 सितम्बर से सभी जनप्रतिनिधियों और नेताओं द्वारा घर-घर संपर्क कर सदस्य बनाया जायेगा। साथ ही सभी कार्यकर्ता अपने-अपने बूथों पर सम्पर्क कर सदस्यता अभियान चलायेंगे। शक्ति केंद्र संयोजक व सहयोगी 07 दिन पूरा समय अपने



शक्तिकेंद्रों पर देकर सदस्यता कार्य सम्पन्न करायेंगे। जनसंपर्क के दौरान घरों-घरों में जाकर पार्टी की विचारधारा, मोदी व योगी सरकार की उपलब्धियां पर चर्चा करनी है। परिवार के सदस्यों को मिस्टकॉल द्वारा संदेश बनाना है और लिंक में फार्म भरवाना है। सदस्यता अभियान के दौरान प्रत्येक सप्ताह में रविवार को अटल सदस्यता पर्व के रूप में मनाना है। कार्यक्रम का संचालन जिला उपाध्यक्ष हरिकेश राम त्रिपाठी व

आभार ज्ञापन जिला महामंत्री सबल सिंह पालीवाल ने किया। इस अवसर पर बैठक में डॉ आर डी सिंह मनोज कुमार शुक्ला, राजाराम कनौजिया, संजय सिंह, छोटेलाल मौर्य, स्वतंत्र सिंह, नरेंद्र सिंह, राम उज्ज्विर शुक्ला, ब्लॉक प्रमुख पूजा सिंह कौशिक, इन्द्र कुमार निगम, सोमनाथ सिंह, मंडल अध्यक्ष शिवचरन प्रसाद, नरेंद्र शुक्ला, धर्मराज गौड़, राम प्रकाश चौरसिया, धीरज त्रिपाठी, समेत लोगों उपस्थित रहे।

ऑल इण्डिया कौमी एकता कमेटी की राष्ट्रीय प्रादेशिक कमेटी घोषित

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवा ब्लॉक के ग्राम पंचायत भिठोरावत के डॉक्टर सईद बाबू रहबर को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर मनोनित किया गया है। ऑल इण्डिया कौमी एकता कमेटी की कार्यकारणी में राष्ट्रीय अध्यक्ष अशफाक हुसैन मेकरानी ने विस्तार करते हुए नई कार्यकारणी में राष्ट्रीय एवं प्रदेश के पद पर प्रवीण कुमार अग्रवाल, एडवोकेट गुफरान खान, डॉ सईद बाबू रहबर, तनवीर आलम एम फिल को मनोनित किया गया है। राष्ट्रीय कार्यकारणी में राष्ट्रीय महासचिव पद पर प्रवीण कुमार अग्रवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर एडवोकेट गुफरान खान, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ सईद बाबू रहबर को जिम्मेदारी देते हुए दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष पद पर वरिष्ठ पत्रकार तनवीर आलम एम फिल को मनोनित किया गया है। मेकरानी ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर पर ऑल इण्डिया कौमी एकता कमेटी काम कर रही है जहां बिहार, झारखंड, गुजरात के साथ साथ उत्तर प्रदेश में बड़े पैमाने पर सेवा कार्य कर ऑल इण्डिया कौमी एकता कमेटी संगठन विस्तार कर रही हैं जहां आज कुछ जिम्मेदार समाजिक योद्धा साथी को दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष पद के साथ अपनी राष्ट्रीय कार्यकारणी में जगह दी गई है। उम्मीद करता हूं सभी साथी संगठन को मजबूत करते हुए सामाजिक क्षेत्र में सेवा कार्य करने पर काम करेंगे सभी नव निर्वाचित पदाधिकारी गण को बधाई।



जौनपुर में समूह की 11 महिलाओं से ठगी समूह की प्रधान पर 12 लाख लेकर फरार होने का आरोप, मुकदमा दर्ज

अमन लेखनी समाचार

जौनपुर, जौनपुर के मखलीशहर नगर में एक महिला समूह की प्रधान और उसके तीन भाइयों पर 11 महिलाओं ने 12 लाख रुपये की ठगी का आरोप लगाया है। पुलिस ने इस मामले में सभी पीड़ित महिलाओं की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया है और जांच शुरू कर दी है। ठगी की इस घटना से पूरे क्षेत्र में हड़कंध मच गया है। समूह की सदस्य लीलावती गुप्ता समेत 11 महिलाओं ने बताया कि उनके समूह की प्रधान शहनाज, जो शम्भेर अली की पत्नी है, ने घरेलू समस्या का हवाला देकर समूह के नाम पर ऋण स्वीकृत करवाया। शहनाज ने यह रकम खुद हड़प ली और फरार हो गई। अब महिलाओं से हर महीने ऋण की किश्त वसूली जा



रही है, जिससे उन्हें भारी आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा है। जब पीड़ित महिलाएं शहनाज के घर शिकायत करने गईं, तो उसके भाइयों - कल्लू, अखार और अकबर ने उन्हें गाली देकर भगा दिया। महिलाओं का

कर पा रही हैं। एफआईआर में दर्ज विवरण के अनुसार, ठगी की गई राशि इस प्रकार है: आशमां से 1 लाख 15 हजार, सफीकुल बानो से 47 हजार, चंदा से 40 हजार, अनीसा से 1 लाख 90 हजार, अमीना से 75 हजार, लीलावती गुप्ता से 80 हजार, नूरजहा से 1 लाख 50 हजार, अफसाना से 60 हजार, नाजों से 50 हजार, चांदनी से 30 हजार और बेगम से 30 हजार रुपए हैं। इन सभी महिलाओं का आरोप है कि शहनाज उनके साथ धोखा करके फरार हो गई है। प्रभारी निरीक्षक सत्यप्रकाश सिंह ने बताया कि महिलाओं की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और मामले की जांच शुरू कर दी गई है। आरोपियों की तलाश की जा रही है, और जल्द ही कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

दुपट्टे के सहारे पंखे की कुंडी में विवाहिता का लटका मिला शव

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवा ब्लॉक अंतर्गत हरपुर बुदहट थाना क्षेत्र के सोनबरसा बाबू पुलिस चौकी अन्तर्गत ग्राम पंचायत तुलसी रतन निवासिनी शीला पत्नी श्रवन कन्नौजिया उम्र करीब 42 वर्ष ने मंगलवार को सुबह 7 बजे के करीब पंखे में दुपट्टा बांधकर खुदकुशी कर ली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दरवाजा तोड़ कर शव को पंखे से उतार कर कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। थाना क्षेत्र के सोनबरसा बाबू पुलिस चौकी अन्तर्गत ग्राम पंचायत तुलसी रतन निवासिनी शीला पत्नी श्रवन कन्नौजिया उम्र करीब 42 वर्ष ने सोमवार की रात में पति से कुछ कहासुनी करने के बाद कमरे में जाकर अन्दर से दरवाजा बंद कर पंखे में दुपट्टा बांधकर खुदकुशी कर

ली। मंगलवार को सुबह जब दरवाजा नहीं खुला तो स्वजनों ने पुलिस को सूचना दिया, मौके पर पहुंची हरपुर-बुदहट पुलिस ने लोहे का दरवाजा तोड़ कर जब अन्दर घुसे तो मृतका पंखे में दुपट्टा बांधकर लटक रही थी। पुलिस ने शव को पंखे से उतार कर कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतका का मायका सहजनवा थाना क्षेत्र के ग्राम मलउर में है, मृतका के पिता का नाम मोती लाल कन्नौजिया है। पति श्रवन कन्नौजिया विदेश दुबई रहते हैं। वह करीब एक माह पहले घर आए हैं, और वह एक सप्ताह बाद फिर दुबई जाने वाले थे। मृतका के दो लड़की और एक लड़का है, एक लड़की की शादी हो चुकी है। इस संबंध में थानाध्यक्ष विशाल सिंह ने बताया कि मृतका के मायके वालों द्वारा कोई तहरीर नहीं दी गई है।

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवा ब्लॉक अंतर्गत हरपुर बुदहट थाना क्षेत्र के सोनबरसा बाबू पुलिस चौकी अन्तर्गत ग्राम पंचायत तुलसी रतन निवासिनी शीला पत्नी श्रवन कन्नौजिया उम्र करीब 42 वर्ष ने सोमवार की रात में पति से कुछ कहासुनी करने के बाद कमरे में जाकर अन्दर से दरवाजा बंद कर पंखे में दुपट्टा बांधकर खुदकुशी कर

ली। मंगलवार को सुबह जब दरवाजा नहीं खुला तो स्वजनों ने पुलिस को सूचना दिया, मौके पर पहुंची हरपुर-बुदहट पुलिस ने लोहे का दरवाजा तोड़ कर जब अन्दर घुसे तो मृतका पंखे में दुपट्टा बांधकर लटक रही थी। पुलिस ने शव को पंखे से उतार कर कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतका का मायका सहजनवा थाना क्षेत्र के ग्राम मलउर में है, मृतका के पिता का नाम मोती लाल कन्नौजिया है। पति श्रवन कन्नौजिया विदेश दुबई रहते हैं। वह करीब एक माह पहले घर आए हैं, और वह एक सप्ताह बाद फिर दुबई जाने वाले थे। मृतका के दो लड़की और एक लड़का है, एक लड़की की शादी हो चुकी है। इस संबंध में थानाध्यक्ष विशाल सिंह ने बताया कि मृतका के मायके वालों द्वारा कोई तहरीर नहीं दी गई है।

जालौन में महिला की हत्या का खुलासा

○ पुलिस ने आरोपी को हाफ एनकाउंटर के बाद पकड़ा, खेत में नग्न अवस्था में मिला था शव

अमन लेखनी समाचार

जालौन, जालौन जिले में 4 दिन पहले एक महिला के नग्न शव की गला दबाकर हत्या कर दी गई थी, जिसका खुलासा अब पुलिस ने कर दिया है। हत्या के आरोप में पुलिस ने आरोपी को हाफ एनकाउंटर के बाद गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी को गंभीर हालत में इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है, और हत्या का उद्देश्य अभी तक स्पष्ट नहीं हो सका है। घटना कालपी कोतवाली क्षेत्र के ग्राम उमरगांव की है, जहां एक अज्ञात विवाहित महिला का नग्न शव खेत में मिला था। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में महिला की गला घोटकर हत्या किए जाने की पुष्टि हुई थी। इसके बाद पुलिस ने शव की शिनाख्त की और उसके पिता की शिकायत पर मुकदमा दर्ज किया। पुलिस अधीक्षक डॉ. दुर्गेश कुमार ने



बताया कि हत्याकांड की जांच के लिए 6 टीमों का गठन किया गया था। रात पुलिस को सूचना मिली कि आरोपी चंद्रपाल उर्फ रण विजेन्द्र पाल अहिरवार अपने घरवालों से मिलने के लिए गांव आ रहा है और पुलिस से बचने की कोशिश कर रहा है। पुलिस ने उसे घेराबंदी करके सरसेला रोड पर

रोकने की कोशिश की, लेकिन आरोपी ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई में पुलिस की एक गोली चंद्रपाल के पैर में लगी, जिससे वह घायल हो गया। गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने चंद्रपाल के पास से अनेक असलहा, कारतूस, खोखा और बाइक भी बरामद की।



इटावा के बेसिक शिक्षकों द्वारा बनाई लघु फिल्म 'सोनचंपा' का पोस्टर रिलीज

बेसिक स्कूलों की छात्राओं को जागरूक करने के लिए किया गया फिल्म का निर्माण

अमन लेखनी समाचार

इटावा। जनपद इटावा के बेसिक शिक्षकों द्वारा बनाई गई फिल्म सोनचंपा के पोस्टर का विमोचन केंद्रीय हिंदी संस्थान में डॉ रविंद्र शुक्ल पूर्व शिक्षा मंत्री उत्तर प्रदेश, भगवान सिंह कुशवाहा विधायक खैरागढ़, तथा ओमपाल सिंह निडर राष्ट्रीय कवि एवम पूर्व सांसद तथा राजेश शर्मा शिक्षाविद के कर कमलों द्वारा किया गया।

फिल्म के निमाता और निर्देशक रामजनम सिंह ने बताया कि एक अध्ययन के अनुसार, भारत की 355 मिलियन मासिक धर्म वाली महिलाओं में से केवल 36% ही सैनिटरी नैपकिन का उपयोग करती हैं, जब कि बाकी



महिलाएँ अपने रक्त प्रवाह को प्रबंधित करने के लिए पुराने अस्वच्छ कपड़े, आदि सामग्री का उपयोग करती हैं। ये मान्यताएँ हमारे सामूहिक सत्य में इतनी गहराई से समा जाती हैं कि हम उन्हें त्यागने से इनकार कर देते हैं, भले ही वे

परिस्थितियाँ बदल जाएँ जिनमें वे उत्पन्न हुई थीं। आंकड़े बताते हैं कि लड़कियाँ अपने मासिक धर्म से जुड़ी शर्म के कारण हर महीने छह दिन की पढ़ाई छोड़ देती हैं। यह भारत में हर साल स्कूल छोड़ने वाली लड़कियों की

संख्या में योगदान देता है। स्कूल छोड़ने वाली लड़कियाँ अपने कैरियर में पिछड़ जाती हैं और उनके बाल वधु बनने की संभावना बढ़ जाती है। सामाजिक वर्जनाओं तथा एक बंद विषय के रूप में होने के कारण विद्यालय के शिक्षक भी इन मुद्दों पर बात नहीं करते। विद्यालय में आने वाले सेनेटरी पैड निस्प्रयोज्य सामग्री की तरह नष्ट होते रहते हैं। तथा स्वास्थ्य सेवाओं पर होने वाला खर्च का सही उपयोग नहीं होता। इन सभी मुद्दों को तथा बालिका शिक्षा एवम स्वास्थ्य विषय में जागरूकता बढ़ाने का कार्य फिल्म सोनचम्पा करेगी। फिल्म की सह निर्मात्री मंजू भदौरिया ने बताया कि इस फिल्म में इटावा जनपद के बेसिक

शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने कार्य किया है। फिल्म का संपादन स्थानीय जी स्टूडियो में अनमोल प्रताप सिंह द्वारा किया गया है। संगीत सुरेश कुशवाहा, और साध्वी संघ्या तथा गीत जितेंद्र कविराज ने लिखा है। फिल्म के मुख्य पात्रों में मंजू भदौरिया, वीनस सेंगर, आरिफ शह डोली, रामजनम, दिनेश माथुर, संजीव यादव, अनुपम कौशल, संदीप यादव, शहनवाज, सतीश कुमार, अंकित चौहान हैं। कहानी शिक्षक शिव अवतार पाल ने लिखी है। फिल्म के डीओपी आकाश दीक्षित हैं। फिल्म का प्रोडक्शन रवीन्द्र चौहान और पोस्टर डिजाइन यश कश्यप द्वारा किया गया है। फिल्म के लीगल एडवाइजर अभय प्रताप सिंह हैं।

एम्स के प्रसिद्ध सर्जन डॉ.अमित गुप्ता ने संजय गांधी अस्पताल में ज्वाइन किया

मरीजों को मिलेगी बेहतर ऑपरेशन की सुविधा

अमन लेखनी समाचार



सर्जन अमित गुप्ता

समय और रुपए दोनों की हो रही बचत

अस्पताल में हाल ही में कैसर यूनिट का उद्घाटन किया गया था, जो 31 अगस्त को सांसद किशोरी लाल शर्मा द्वारा किया गया। 12 सितंबर से इस यूनिट में ओपीडी सेवा शुरू हो चुकी है। वर्तमान में करीब 20 से 25 कैसर मरीज नियमित रूप से अपनी जांच और इलाज के लिए आ रहे हैं। हृदय रोगियों के इलाज के लिए डॉ. सत्येंद्र तिवारी की टीम पिछले दो महीनों से काम कर रही है। इस दौरान 70 से 90 मरीज रोजाना इलाज प्राप्त कर रहे हैं, जिससे उनका समय और पैसे दोनों की बचत हो रही है।

सैफर्ड मेडिकल यूनिवर्सिटी के पेसमेकर धोखाधड़ी के अभियुक्त को सैफर्ड पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर भेजा गया जेल

नॉन एमआरआई पेसमेकर लगाने से कई मरीजों को हो चुकी है मौत, कई मौत के मुंह में

अमन लेखनी समाचार/सुघर सिंह सैफर्ड

सैफर्ड (इटावा)। उत्तर प्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, सैफर्ड इटावा में अनावश्यक आर्बिट्रीरी परचेज, पेसमेकर धोखाधड़ी, गहन भ्रष्टाचार एवं अनावश्यक विदेश यात्राएँ के आरोपी डाक्टर को पेसमेकर उपलब्ध कराने वाले वॉलेंट अभियुक्त को सैफर्ड पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

एसएसपी इटावा संजय वर्मा ने बताया कि 7 फरवरी 2022 को चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर डा0 अदेश कुमार द्वारा डा0 समीर सराफ तत्कालीन असिस्टेंट प्रोफेसर कांडियोलोजी विभाग सैफर्ड इटावा के विरुद्ध अनावश्यक आर्बिट्रीरी परचेज, पेसमेकर धोखाधड़ी, अनावश्यक विदेश यात्राएँ एवं गहन भ्रष्टाचार करके विश्वविद्यालय को लाखों रुपये के लोकधन की वित्तीय हानि तथा मरीजों



को भी धोखाधड़ी का शिकार बनाने जाने के संबंध में मु0अ0स0 17/2022 धारा 7/8/9/13/14 भ्रष्टाचार निवारण अधि0 1988 व धारा 467/468/471/420/304 भादवि पंजीकृत कराया गया था। इस मामले में थाना सैफर्ड पुलिस द्वारा अभियुक्त डॉ समीर सराफ जितेंद्र कुमार को दिनांक 7 नवंबर 2023 को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। एवं अन्य अभियुक्तों को गिरफ्तारी हेतु पुलिस टीम प्रयासरत थी। कल रविवार को थाना सैफर्ड पुलिस को सूचना प्राप्त

हुई कि मु0अ0स0 17/22 से संबंधित अभियुक्त पीजीआई सैफर्ड के गेट नं 03 के पास खड़ा है। सूचना पर तत्काल कार्यवाही करते हुए थाना सैफर्ड पुलिस टीम द्वारा पीजीआई सैफर्ड के गेट नं 03 के पास से समय 12:28 बजे अभियुक्त इन्द्रजीत कुमार पुत्र बादराम को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त से पूछताछ करने पर उसके द्वारा बताया गया कि मैं कृष्णा हेल्थकेयर जो बायोटेक्निकल कम्पनी के पेसमेकर की आपूर्ति करता हूँ। मेरा कार्य फर्म से पेसमेकर लेकर सम्बन्धित

चिकित्सक को उपलब्ध कराना है वर्ष 2018 से पीजीआई सैफर्ड के डा0 समीर सराफ द्वारा मरीजों को नॉन एमआरआई पेसमेकर लगाकर एमआरआई पेसमेकर का मूल्य मेरे माध्यम से परिजनों से वसूला गया। बायोटेक्निकल कम्पनी के एमआरआई पेसमेकर का मूल्य लगभग 2 लाख रुपए तथा नॉन एमआरआई पेसमेकर का मूल्य 80 से 90 हजार तक होता है। इस वस्तु की अधिक धनराशि में से 10 प्रतिशत कमीशन मुझे दिया जाता था और बताया कि उसके द्वारा डा0 समीर सराफ को लगभग 70 से 80 पेसमेकर उपलब्ध कराये गये हैं गिरफ्तार अभियुक्त ने अपना नाम इन्द्रजीत पुत्र बादराम निवासी सी-51 सहकार नगर मसवानपुर थाना कल्यानपुर जनपद कानपुर नगर मूल पता- ग्राम लोहारपुर पोस्ट टन्डवा थाना तरवा जनपद आजमगढ़ बताया है। गिरफ्तारी टीम में क्षेत्राधिकारी सैफर्ड शैलेन्द्र प्रताप गौतम, प्रभारी निरीक्षक थाना सैफर्ड अलमा अहिरवार उ0नि0 सतीश कुमार, का0 पुष्पेंद्र सिंह शामिल रहे।

कानून व्यवस्था एवं विकास कार्यों के संबंध में प्रभारी मंत्री की अध्यक्षता में हुई बैठक

अमन लेखनी समाचार

हमीरपुर। शासन के प्राथमिकता बिंदु, कानून व्यवस्था एवं विकास कार्यों की समीक्षा बैठक जनपद के प्रभारी मंत्री श्रम एवं सेवायोजना विभाग उ0प्र0 मनोहर लाल की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित डॉ एपीजे अब्दुल कलाम सभागार कक्ष में संपन्न हुई। इस मौके पर मंत्री ने कहा कि जनता की समस्याओं का जनपद स्तर/ जमीनी स्तर पर ही गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारण हो इस पर मा मुख्यमंत्री की विशेष ध्यान है अतः जन समस्याओं का प्रभावी ढंग से गुणवत्तापूर्ण निस्तारण किया जाए। कहा कि विभिन्न योजनाओं का लाभ सभी पात्र व्यक्तियों तक पहुंचे तथा विकास कार्य गांव गांव तक पहुंचे इसके लिए प्रभावी ढंग से कार्य किए जाएं। तहसील, ब्लॉक, थाने स्तर पर ही समस्याओं का गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारण किया जाए। उन्होंने कहा कि अधिकारियों

को जो दायित्व दिए गए हैं उनका पूरी ऊर्जा के साथ एवं जिम्मेदारीपूर्वक निर्वहन करें इसमें किसी भी तरह की लापरवाही न बरतें। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारियों द्वारा मुख्यमंत्री की अपेक्षा के अनुसार अपने विभागीय कार्यों को सम्पादित किया जाए। उन्होंने कहा कि अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु कार्य किया जाए।

विकास कार्यों के विभिन्न बिंदुओं पर समीक्षा करते हुए मंत्री ने कहा कि श्रम विभाग द्वारा अभियान चलाकर श्रमिकों का पंजीकरण कराया जाए। अभियान चलाकर अवशेष लोगों/ पात्र लोगों के गोल्डन कार्ड बनाए जाएं तथा उन्हें एक्टिवेट कराया जाए। पशु आश्रय स्थलों में चारा, पानी, भूसा की उपलब्धता रहे। नगरीय निकाय तथा ग्रामीण क्षेत्रों में नियमित रूप से साफ सफाई आदि की व्यवस्था सुनिश्चित

की जाए। सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत राशन कार्ड धारकों को प्रत्येक माह समय से राशन आदि वितरित किया जाए। जल जीवन मिशन की समीक्षा में मंत्री ने कहा कि जल जीवन मिशन के अंतर्गत संपादित होने वाले सभी कार्य समयबद्ध ढंग से किए जाएं। उन्होंने कहा कि विद्युत विभाग द्वारा ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में रोस्टर के अनुसार निर्धारित अवधि तक विद्युत की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

इस मौके पर मंत्री ने विभिन्न बिंदुओं यथा स्वास्थ्य सुविधाओं, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, अन्ना गोवंश संरक्षण, मिशन कायाकल्प, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं ग्रामीण, मुख्यमंत्री आवास योजना, कन्या सुमंगला योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, पोषाहार वितरण, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, ओडीओपी, विश्वकर्मा श्रम सम्मान, खत्रवृत्ति वितरण, पेंशन

योजना, रोजगार मेला श्रमिकों का पंजीयन, मनरेगा, चिकित्सालय में दवा की उपलब्धता, टीकाकरण, सड़कों का निर्माण, ग्रामीण सचिवालय, सामुदायिक एवं व्यक्तिगत शौचालय, ऑरेंजेशन कायाकल्प पर्यटन संवर्धन आदि बिंदुओं पर समीक्षा कर संबंधित को जरूरी दिशा निर्देश दिए। उन्होंने निष्ठा से काम करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने तथा कार्य में लापरवाही बरतने वालों पर कड़ी कार्यवाही करने के निर्देश संबंधित को दिए।

इस दौरान सांसद राज्य सभा सदस्य बाबू राम निषाद, विधायक राठ मनीषा अरुणागी, अध्यक्ष नगर पालिका हमीरपुर शकुलदीप निषाद, जिलाधिकारी राहुल पाण्डेय, पुलिस अधीक्षक डॉ दीक्षा शर्मा, मुख्य विचार अधिकारी चन्द्र शेखर शुक्ला, अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे सुरेश कुमार, सहित अन्य संबंधित विभागों के जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

उपजिलाधिकारी ने प्राथमिक विद्यालय गोहना का किया औचक निरीक्षण

अमन लेखनी समाचार/हेमन्त यादव

गरोटा, झाँसी। शिक्षा विभाग को लेकर आये दिन लापरवाही की खबरें आ रही थी जिसको लेकर उप जिलाधिकारी गरोटा के कडे तेवर देखने को मिल रहे हैं। उप जिलाधिकारी अरुणेश कुमार तिवारी प्रतिदिन किसी न किसी विद्यालय में पहुँचकर विद्यालय को चेक कर बच्चों को पढ़ाई भी कराते नजर आ रहे हैं। उन्होंने कहा विद्यालयों में कोई भी लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। अध्यापक समय से विद्यालय पहुँचे और बच्चों को शिक्षा प्रदान करें। उप जिलाधिकारी ने मीडिया से बात करते हुये कहा की गरोटा तहसील में आमजन खेती पर निर्भर हैं उनके पास कोई आय का दूसरा जरिया नहीं है। प्रखण्ड विद्यालय में बच्चों को पढ़ाना संभव नहीं है और सरकारी विद्यालय में अधिकतर बच्चे पढ़ने जाते हैं।



उन्होंने कहा जब तक मे यहाँ मौजूद हूँ तब तक कोई भी विद्यालय स्टाफ लापरवाही नहीं करेगा और बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करें जिससे बच्चों का भविष्य बन सके। उपजिलाधिकारी के ऐसे निर्णय से नगर में उनकी खूब चर्चा हो रही है। आमजन का मानना है की ऐसे अधिकारी अगर पूरे जिले में हो जाए तो उनके बच्चों का भविष्य अच्छा

बन सकता है। वहीं उपजिलाधिकारी ने कहा की निरंतर विद्यालयों को चेक किया जायेगा किसी भी सूरत में बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। उपजिलाधिकारी ने कहा बच्चों को दिए जा रहे मध्यान्ह भोजन में अगर कोई भी लापरवाही बरती गयी तो उनके ऊपर कठोर कार्यवाही की जाएगी।

आज हम तुम्हें मनाते हैं, गजानन कर दो बेड़ा पार



अमन लेखनी समाचार

गोंडा: शहर के आवास विकास कालोनी में स्थापित गणेश प्रतिमा पर सोमवार की शाम भव्य पूजन अर्चना किया गया। दीपक श्रीवास्तव व आलोक द्विवेदी ने गणपति की प्रार्थना के साथ ही भक्ति गीत प्रस्तुत किया। पूरा पंडाल गणपति बप्पा मोरया की गुंजन से गुंजायमान रहा। कार्यक्रम में लवली त्रिपाठी, गीता त्रिपाठी, पूरम तिवारी, यश तिवारी,

नंदलाल आदि मौजूद थे। भगवान गणेश की धूमधाम से पूजा-अर्चना हुई। विभिन्न प्रतिमा स्थलों पर श्रद्धालुओं की भीड़ सुबह से ही लगने लगी थी। हर स्थानों पर श्रद्धालु गणपति बप्पा मोरया का जयकारा लगा रहे थे। लोगों ने भगवान गणेश को लड्डू और मोदक चढ़ाकर कर भक्ति भाव से पूजा अर्चना की। कहीं शेर पर, कहीं चूहे पर प्रतिमा को सजायी गयी थी, तो कहीं भंडारा हुआ, तो कहीं सांस्कृतिक आयोजन हुआ।

प्रधानमंत्री आवास योजना की खुली बैठक में दी गई जानकारी



अमन लेखनी समाचार/हेमन्त यादव

गरोटा, झाँसी। ब्लॉक बामौर अंतर्गत ग्राम पंचायत कचौर के ग्राम पंचायत सचिवालय में मंगलवार को प्रधानमंत्री आवास योजना के चयन हेतु खुली बैठक का आयोजन ग्राम प्रधान प्रतिनिधि साहब सिंह यादव की अध्यक्षता एवं क्षेत्र पंचायत सदस्य हेमन्त यादव की मौजूदगी में किया गया। इस मौके पर ग्राम विकास अधिकारी किशोर कुमार ने प्रधानमंत्री

आवास योजना में पात्र व्यक्तियों के सामने पात्रता और अपात्रता के बारे में बताया। उन्होंने कहा की जो ग्रामवासी पात्र ना हो वह खुद दूसरे व्यक्ति का अधिकार न छीने और पात्र व्यक्तियों तक योजना का लाभ पहुँचने दे। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि ने कहा की कोई भी पात्र व्यक्ति छूटने नहीं पाएगा। उन्होंने कहा की पात्र व्यक्ति प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ अवश्य लें। इस मौके पर बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

मिलन परिहार बने अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के बुदेलखंड पवता

अमन लेखनी समाचार/हेमन्त यादव

झाँसी। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा में मिलन सिंह परिहार को युवा बुदेलखंड प्रवक्ता एवं मीडिया प्रभारी के पद पर युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवसिंह परिहार ने राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेंद्र सिंह तोमर युवा राष्ट्रीय महामंत्री कुलदीपसिंह सिकरवार, युवा राष्ट्रीय संगठन मंत्री दीपेंद्र सिंह राजावत, प्रदेश अध्यक्ष राजीव सिंह चौहान, युवा प्रदेश अध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह सोनवर्षा की सहमति एवं बुदेलखंड प्रभारी जय प्रताप सिंह राजावत की अनुशंशा से नियुक्त किया।

वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान समारोह एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

अमन लेखनी समाचार

राठ, हमीरपुर। जेसीआई के तत्वाधान में 7 दिनों तक चलने वाले जेसी सप्ताह के पहले दिन वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान समारोह एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सोमवार से शुरू हुए कार्यक्रम में पहले दिन महावीरन मंदिर में वरिष्ठ नागरिक रामप्रकाश बुधौलिया, रामाधार गुप्ता, गुलाब सिंह सेंगर, अरुण तिवारी, चंद्रशेखर मिश्रा, डॉ. सीपी सावल, रामसहोदर गुब्बारे, डा. जमील राठवी, कन्हैया लाल खैरिया, डॉ. रामगोपाल गुप्ता,

श्रीप्रकाश तिवारी को शाल ओढ़ाकर सम्मान किया और मंदिर परिसर में लाल चंदन, पारस पीपल, बेलपत्र और अपराजिता सहित कई दर्जन वृक्षों का रोपण किया। वरिष्ठ नागरिक सेवा समिति के अध्यक्ष शिक्षक गुलाब सिंह सेंगर ने कहा पेड़ों की कटान से पर्यावरण बिगड़ रहा है। युवाओं को हरे भरे और फलदार पेड़ लगाने चाहिए। जेसीआई के युवाओं को धन्यवाद देते की लाल चंदन, पारस पीपल जैसे पेड़ों का रोपण किया। इस मौके पर नवीन बुधौलिया, केजी अग्रवाल, रविंद्र गुप्ता, प्रवीण बुधौलिया, धर्मेन्द्र कोस्टा, सूर्यमणि तिवारी, शिवशरण आदि उपस्थित रहे।

गणेश आरती कर डॉ. संदीप सरावगी ने प्रसाद किया वितरित

अमन लेखनी समाचार/हेमन्त यादव

झाँसी। न्यू सहारा हॉस्पिटल में डॉ. संदीप सरावगी ने गणेश आरती कर संधीप सरावगी ने प्रसाद किया वितरित किया गया। इस अवसर



पर डॉ. विजय पहारिया, ललित दीक्षित मंडल अध्यक्ष भाजपा, वंदना राजपूत, कामिनी राजपूत, राहुल यादव, अजय कुशावहा, राहुल प्रजापति, प्रशांत गुप्ता, सोनू परिहार, ऋषभ यादव, बृजेश दुबे, महेंद्र चौबे, रीमा तिवारी, हृष्या, किरण दुबे, महावल पाल, सुहास, इमरान खान बीजेपी, अजय कुशावहा, कल्पना,

रुचि, सरोज नायक, रेखा अहिरवार, कंचन पाल, मुस्कान प्रजापति, संगीता, देवाश, क्रिश, प्रिंस, देवाश विश्वकर्मा, आयुष शर्मा, संधीप नामदेव, कमल मेहता, राजू सेन, बसंत गुप्ता, दीक्षा साहू, अरुण पांचाल, आशीष विश्वकर्मा, राकेश अहिरवार आदि उपस्थित रहे।

सार्वजनिक हैडपंप पर भूमि व्यापारी का कब्जा

राहगीरों के कंट सूखे हैडपंप का आधा हिस्सा अलग कर डाल दी समार सेवल मोटर

अमन लेखनी समाचार

ललितपुर / हाल ही में ललितपुर जिला में भूमि कारोबारियों की जिला प्रशासन ने सूची जारी कर दी जिससे जिला में भू करिवारियों में हड़कंप मचा हुआ है वहीं अन्य जिलों के जमीनी व्यापारियों का कारोबार आए दिन बढ़ता जा रहा है हाल ही में जिला मुख्यालय समीप ग्राम रजवारा में मुख्य सड़क पर कई जगह हाटिंग का काम जोरों से चल रहा है जिला प्रशासन की आखों में धूल झाँक राजस्व विभाग को लाखों की हानि उठानी पड़ रही है नहर चौराहे स्थित मुख्य सड़क पर लगे

राहगीरों की प्यास बुझाने पंचायत द्वारा लगाया गया हैडपंप पर जमीनी व्यापारी के कब्जा कर बिजली की मोटर डाल कर हैडपंप के पानी से जमीन पर आवासीय वेश कीमती फ्लैटों में पानी का उपयोग किया जा रहा है हद तो तब हो गई जब कारोबारियों ने हैडपंप का आधा हिस्सा ही उखाड़ ले गए सड़क से निकलने वाले राहगीर अब प्यासे ही वापिस जाना पड़ता है जहाँ पर राज्य एवम केंद्र सरकार गांव में विकास के तं लाखों करोड़ों रुपया खर्च करती है वहीं सरकारी संपत्ति पर कब्जा करने वालों पर जिला प्रशासन कार्यवाही करता है या नहीं जिला अधिकारी द्वारा क्या कार्यवाही की जाती है।

अमन लेखनी (हिन्दी दैनिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती अखिलेश सिंह द्वारा अवध एक्सप्रेस प्रकाशन, 424, खिल्ल लाइन, जेल रोड, उन्नाव, उत्तर प्रदेश से मुद्रित और ग्राम पौस्ट-बनी, थाना- बन्धरा, लखनऊ- 226401 (उ.प्र.) से प्रकाशित।

सम्पादक - श्रीमती अखिलेश सिंह
समाचार सम्पादक - रुद्र प्रताप सिंह
समाचार से संबंधित सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र लखनऊ होगा।
मो. - 9838159555, 9935457982
E-mail address amanlekhani@ gmail.com

सहेली

ऐसे खत्म हो जाएंगी आपकी सारी बाधाएं

अगर आप भी जीवन में आने वाली बाधाओं और समस्याओं से परेशान रहती हैं तो एक स्ट्रेटजी के साथ चलें। इससे आपकी राह में आने वाली तमाम बाधाएं देखते-देखते ही खत्म हो जाएंगी, और आप निरंतर सफलताएं पाती रहेंगी।



सेल्फ मोटिवेशन
शिखर चंद जैन

हुत बार महिलाओं के साथ ऐसी स्थिति आ जाती है कि वे जिस भी काम को हाथ में लेती हैं, पूरा ही नहीं हो पाता है। बार-बार जब यह होता है तो उनका मन हताश-निराश हो जाता है। अगर आप भी इस तरह की मन:स्थिति से गुजर रही हैं तो सबसे पहले यह जान लें कि बाधाएं केवल आपके जीवन में नहीं आती हैं, ये सभी के जीवन में आती हैं। इन बाधाओं के सामने आपको कभी हार नहीं माननी है। साहस के साथ ना केवल इनका सामना करना है, इन्हें जीतना भी है। इसके बाद खुशियां आपकी मुट्ठी में होंगी। इसके लिए आपको कुछ बातें अमल में लानी होंगी-
कभी मुश्किलों से ना घबराएं: आप जान लें कि कोई भी काम सहज-सरल नहीं है। किसी भी काम में छोटी-मोटी बाधाएं आना एक सहज-सी बात है। लेकिन इससे घबराना या इन्हें बड़ा करके आकना आपको लिए नुकसानदायक होगा। इनसे घबराना छोड़कर अपनी योजना के मुताबिक आगे बढ़ती रहें, अपने को खूबसूरत अंजाम दीजिए। बस आपके भीतर यह आत्मविश्वास होना चाहिए कि अपनी सूझबूझ से हर बाधा को पार कर लेंगी।
अनुभवी लोगों से सलाह लें: अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए इन्हें समझना जरूरी है, पहले समझें फिर सोचें कि आपके सोशल या प्रोफेशनल सर्कल में कौन ऐसा व्यक्ति है, जो आपको सही सलाह देकर आपका मार्गदर्शन कर सकता है। ऐसे लोगों से संपर्क करें और उन्हें पूरी बात बताते हुए समाधान सुझाने का आग्रह करें। यकीन करें, बहुत हद तक आपकी अड़चन केवल सही व्यक्ति से सलाह लेकर दूर हो जाएंगी।
अड्डी ना रहें: अगर आपके काम में लगातार बाधाएं आ रही हैं तो समझने की कोशिश करें कि कहीं आपके काम करने

के अंदाज या प्लानिंग में कोई कमी तो नहीं है। बुद्धिमानों इसी में है कि प्लानिंग और एग्जीक्यूशन के तरीके में बदलाव लाएं, अपनी जित पर अड़े रहने से आप कभी सफल नहीं रहेंगी, दूसरों से पिछड़ जाएंगी। साथ ही अपना सही आकलन भी करें और अपने लक्ष्य तक पहुंचने का नया रास्ता चुनें। यह सोच आपको कामयाबी की राह पर लाएगी। जीवन में किसी भी काम को हाथ में लें तो आसानी से हार नहीं मानें, बाधाओं से निपटें। जब बार-बार प्रयासों के बाद भी साहस के साथ सफलता ना मिल रही हो, अपना समय, ऊर्जा और धन बर्बाद हो रहा हो तो ऐसे काम को प्रेस्टीज इश्यू ना बनाकर, उससे दूरी बना लें। ऐसे में अनावश्यक जोश और बहादुरी नहीं बल्कि समझदारी दिखानी चाहिए। आपको समय रहते मान लेना चाहिए कि यह काम आपकी क्षमता से बाहर है, इसे छोड़ देने में ही भलाई है। इसके बाद आप किसी सही और सार्थक ढंग से किसी नए काम में जुट सकेंगी।
अपने काम पर विश्वास रखें: मन में विश्वास रखें कि आप जो काम कर रही हैं, वह आपके लिए जरूरी है। इससे आपके मन में उत्साह बना रहेगा। आप अपना काम अपनी पूरी ऊर्जा, बुद्धिमत्ता और कोशल से कर सकेंगी। लेकिन जब आपको अपनी योजना या प्रोजेक्ट पर खुद ही भरोसा नहीं रहेगा या आपने उसे आधे-अधूरे मन से किया तो आप सफल नहीं हो सकेंगी। यह जान लीजिए, जब नजरिया बदलता है तो फिर नजारे भी बदल पाते हैं। आप तय करें कि आपको क्या करना है। आपका विजन क्लियर होना चाहिए।
फैसले लेने से पहले सोचें: हॉवई बिजनेस रिस्क के एक्सपर्ट्स का कहना है कि परिस्थितियां चाहे जैसी हों, कभी भी आवेश में आकर या भावनात्मक होकर कोई फैसला नहीं लेना चाहिए। हो सके तो अपनी पिछली असफलताओं के कारण होने वाले नुकसान को भी ध्यान में रखें। फैसले सोच-समझकर ही लें। आप जब इस तरह अपने करियर में स्ट्रेटजी रखेंगी तो हमेशा नित नई सफलताएं पाती रहेंगी।

इस आधुनिक जीवनशैली में हमारे बच्चों का बचपन गुम हो रहा है। किशोरवय बच्चे अपने अपीयरेंस, एक्सप्रेशन, लुक को लेकर इस कदर कॉन्शस हैं कि कम उम्र में ही वे बड़े दिखने लगे हैं। बच्चों का यूं समय से पूर्व मैच्योर होना उनके व्यक्तित्व को गहरे स्तर पर प्रभावित कर रहा है। ऐसा क्यों हो रहा है, बच्चों का नेचुरल डेवलपमेंट कैसे हो, मनोवैज्ञानिकों से हुई बातचीत पर आधारित आपके लिए बहुत जरूरी सलाह।

समय से पहले मैच्योर होते बच्चे खो रहे हैं अपनी मासूमियत

कवर स्टोरी
अशु सिंह

इसी साल ग्यारहवें वर्ष में प्रवेश किया है सौम्या ने। अपनी ड्रेस, फुटवियर और मेकअप का सेलेक्शन खुद ही करती है। मां या परिवार के किसी सदस्य का हस्तक्षेप उसे बिल्कुल पसंद नहीं है। कहीं घूमने जाना हो, तो बिना हॉटों पर लिप ग्लॉस लगाए नहीं निकलती। कभी-कभी लिपस्टिक भी लगा लेती है। कोई मना करता है, तो बिफर पड़ती है। पैरेंट्स हैरान रह जाते हैं कि उनकी बेटी को बड़े होने की इतनी जल्दी क्यों है? ऐसी चिंता सिर्फ सौम्या के पैरेंट्स की नहीं है, हाल ही में हुए एक सर्वे में करीब दो-तिहाई पैरेंट्स का मत रहा कि उनके किशोर उम्र बच्चे अपने एक्सटर्नल अपीयरेंस को लेकर काफी ज्यादा कॉन्शस रहते हैं।



फेसबुक, यूट्यूब पर आने वाले सौंदर्य संबंधी वीडियो, रील्स को फॉलो करते हैं। ब्यूटी और मेकअप इंफ्लुएंसर्स रोल मॉडल बन चुके हैं, जिनसे आठ और नौ वर्ष की

लड़कियां प्रभावित हो रही हैं। कॉस्मेटिक निर्माता कंपनियों 8 से 12 वर्ष की लड़कियों को लुभाने के लिए समय-समय पर नेल और लिप प्रोडक्ट्स लॉन्च करती हैं। यानी मार्केट में भी सब आसानी से उपलब्ध होता है। असल में मीडिया में जिस प्रकार से एक आइडियल बॉडी और ब्यूटी का बखाना किया जाता है, उसका किशोर उम्र के बच्चों में गलत असर पड़ता है।

वे खुद की तुलना टीवी, सोशल मीडिया, सिनेमा में दिखने वाली मॉडल्स और एक्ट्रेस से करने लगते हैं। वर्ष 2022 में किए गए एक अध्ययन पर ध्यान दें, तो 8 से 12 वर्ष आयु की करीब 57 फीसद लड़कियां अपने अपीयरेंस को लेकर स्वयं सचेत थीं, जबकि 13 से 17 वर्ष की आयु तक पहुंचते-पहुंचते यह दर 73 फीसदी पहुंच गई।

पीयर प्रेशर के कारण बढ़ रही स्लिम दिखने की होड़
देखा यह भी गया है कि जो टीनएज बच्चे जितने अधिक बॉडी कॉन्शस होते हैं, वे नेगेटिव बॉडी इमेज को ज्यादा गंभीरता से लेते हैं। इससे उनका खान-पान तक प्रभावित होने लगता है। शरीर में जरूरी पोषक तत्वों की कमी होने लगती है। टीनएज में इस प्रकार की समस्या से संघर्ष कर चुकी साँफ्टवेयर इंजीनियर नेहा बताती हैं, 'मैं नाइट क्लास में स्कूल की पढ़ाई के साथ-साथ जेईई की तैयारी कर रही थी। पढ़ाई का दबाव तो बढ़ ही गया था। मेरा वजन भी बढ़ने लगा था। क्लास के साथी कमेंट्स करने लगे कि मोटी हो गई हो। यह सुनकर इतना धक्का लगा कि खाना-पीना कम कर दिया। सिर्फ जूस और हल्का नाश्ता करती।

खूब एक्सरसाइज करती। वजन तो कम हो गया, लेकिन कमजोरी महसूस होने लगी। आखिरकार काउंसलर की सलाह से सब सामान्य हो पाया।' दरअसल, किशोर उम्र में पीयर प्रेशर इतना कम कर दिया। सिर्फ जूस और हल्का नाश्ता करती।

पैरेंट्स को रखना होगा ध्यान
छोटी उम्र में बच्चों की मासूमियत गुम हो रही है। इंटरनेट पर हर प्रकार का वयस्क कंटेंट देखने के कारण उन्हें समय से पहले कई चीजों की जानकारी मिल जा रही है। इससे छोटी उम्र में मैच्योरिटी झलकने लग रही है। बाल-व्यवहार का तरीका बदल गया है। आउटडोर एक्टिविटी से अधिक वीडियो गेम, इंटरनेट गेमिंग में दिलचस्पी होती है। बच्चे किसी सामाजिक गतिविधि में रुचि नहीं लेते हैं और ना ही रिश्तों की अहमियत को समझते हैं। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि अगर समय रहते बच्चों के व्यवहार में आ रहे इन बदलावों को ना चेक किया गया, तो उसका उनके मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है। इसलिए जरूरी है कि पैरेंट्स समय रहते चेत् और हस्तक्षेप करें, बच्चों के आत्मविश्वास को मजबूत करें।

सोशल मीडिया कर रहा है प्रभावित
चाइल्ड साइकोलॉजिस्ट रेणु गोयल का मानना है, 'बच्चों की सोच में आ रहे परिवर्तन के लिए उपभोक्ता बाजार और सोशल मीडिया काफी हद तक जिम्मेदार है। वे इंस्टाग्राम,

बाह्य की जगह आंतरिक सुंदरता पर हो जोर
आज हमारा समाज खुद से कटकर, उपभोक्तावादी संस्कृति की ओर बढ़ रहा है। बच्चे नहीं समझ पा रहे हैं कि वे बाहर से कितना भी सुंदर लगने की कोशिश करें, मेकअप कर लें, अगर सोच अच्छी नहीं है, तो सब बेकार है। लेकिन इस पर ध्यान देने की जगह सभी भौतिक चरुओ, जिम, डाइट करने के पीछे पड़े हैं। इसके जरिए ही खूबसूरत दिखने की कोशिश करते रहते हैं। परिणाम यह हो रहा है कि बच्चे समय से पहले मैच्योर हो रहे हैं। हारमोनल बदलाव भी जल्दी शुरू हो जा रहे हैं, जिसका असर उनके रिश्तों पर पड़ता है। उनमें स्थैतिक नहीं होता। सहनशील कम होने से अस्पष्टता सहन नहीं होती। खुद को नुकसान पहुंचाने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की हालिया रिपोर्ट इशारा करती है कि कैसे 15 से 25 वर्ष के बीच के बच्चों-युवाओं में आत्महत्या करने की दर बढ़ती जा रही है। अगर बच्चे खुश रहना, सुंदर दिखना और एक अर्थपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, तो इसके लिए अपनी कर्मियों और विशेषताओं को पहचान कर आना बड़ना होगा। अपने अंतर्मन पर काम करना होगा।

टाक्स

तब नहीं होगी हेयर प्रॉब्लम

बालों की देखभाल में हम जाने-अजाने ऐसी गलतियां करते हैं, जिनका बालों की सेहत पर बुरा असर पड़ता है। जानते हैं कि ऐसी कौन-सी छोटी मिसटेक्स हैं, जिनसे हमारे बाल खराब हो सकते हैं।
बार-बार कंडीशनर लगाना: रूखे बालों में अगर आप बार-बार कंडीशनर लगाती हैं तो

इससे बाल और खराब हो जाते हैं। कंडीशनर में मौजूद नमी बनाने वाले तत्व, ऑयल और सिलिकॉन को जब बालों में बार-बार लगाया जाता है तो ज्यादा नमी के कारण इससे बाल चिपचिपे हो जाते हैं। ऐसे में कंडीशनर को बालों के सिरों पर ही लगाएं। ट्रीटमेंट ऑयल सीरम और उन्हें चमक देने वाले स्प्रे का भी



सावधानी से इस्तेमाल करें क्योंकि इनमें जिन तत्वों का इस्तेमाल होता है, उनमें भी काफी सीरम और उन्हें चमक देने वाले स्प्रे का भी

बालों को बार-बार धोना: आप डीप क्लीनिंग शैंपू का इस्तेमाल इसलिए करती हैं कि यह पानी में मौजूद क्लोरिन, खारेपन, प्रदूषण को कम करते हैं। हकीकत यह है कि इस तरह के शैंपू बालों से धूल मिट्टी तो निकालते हैं लेकिन वह बालों की नमी को भी सोख लेते हैं। इसकी वजह से बाल रूखे और बेजान हो जाते हैं। इसलिए बालों में डीप क्लीनिंग शैंपू का इस्तेमाल केवल सप्ताह में एक बार करना चाहिए। शैंपू माइल्ड होना चाहिए। कंडीशनर भी लाइट होना चाहिए, जो बालों को जड़ों से लेकर उनके अंतिम सिरों तक साफ रखे।
-सहेली फीचर्स

प्रिकॉन्शन
वीना गौतम

पीरियड्स के दौरान अगर आप क्लीननेस और हाइजीन को लेकर कॉन्शस नहीं रहेंगी तो इंटीमेट एरिया में रेशोज या इंचिंग समेत कई तरह की प्रॉब्लम हो सकती हैं। इतना ही नहीं वुमेन हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन द्वारा कराए गए सर्वे में यह बात सामने आई है कि महिलाओं में रिप्राडक्टिव डिजीज के पीछे की बड़ी वजह मेंस्ट्रुअल हाइजीन की अमदखी होती है। इनसे बचने के लिए यहां बताई जा रही बातों को फॉलो करें।

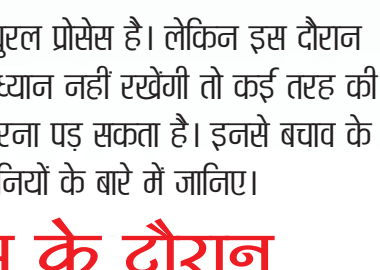
रोज नहाएं: पीरियड्स को लेकर आज भी कई स्थानों में पिछड़ी धारणाएं प्रचलित हैं। जैसे कि उन्हें रसोई में काम करने की मनाही होती है और इन दिनों उन्हें घर में अलग कमरे में रखा जाता है। इतना ही नहीं उन्हें नहाने के लिए भी मना किया जाता है। जबकि इस दौरान अगर रोज नहाना नहीं कराएंगी तो स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए पीरियड्स के दौरान रोजाना नहाएं।



पीरियड्स का आना एक नेचुरल प्रोसेस है। लेकिन इस दौरान अगर आप हाइजीन का पूरा ध्यान नहीं रखेंगी तो कई तरह की हेल्थ प्रॉब्लम का सामना करना पड़ सकता है। इनसे बचाव के लिए जरूरी सावधानियों के बारे में जानिए।

पीरियड्स के दौरान रखें हाइजीन का ध्यान

इससे ना केवल आप साफ रहती हैं बल्कि पीठ दर्द, पेट में ऐंठन, पेट फूलना, मूड स्विंग जैसी समस्याओं से भी राहत मिलती है।
खान-पान का रखें खयाल: पीरियड्स के दौरान दर्द से राहत पाने के लिए ज्यादा चाय, कॉफी और खट्टी चीजों से परहेज करना चाहिए। जिन खानों से एसिडिटी होती है, उनसे इस समय दूर रहें।
बहुत बार इस तरह के खानों की वजह से पीरियड्स के दौरान स्मेल आती है।
सेनिटेशन का तरीका: आजकल पीरियड्स के दौरान योज करने के लिए बाजार में सेनेटरी नैपकिन, टैपॉन, मैस्ट्रुअल कप मिलते हैं। ऐसे में आपको जिनमें कंफर्ट महसूस हो, ऐसे एंटीबैक्टीरियल सेनेटरी नैपकिन का इस्तेमाल



करना सबसे सही रहता है। क्लीनिंग अगर ज्यादा हो रही हो तो हर दो तीन घंटे बाद पैड बदलना चाहिए। अपने इनरवियर पर भी ध्यान दें। क्लीनिंग ज्यादा है तो इसे भी दिन में दो बार बदलें।
हाथ भी धोती रहें: सेनेटरी पैड या टैपॉन या फिर मैस्ट्रुअल कप बदलने के बाद अपने



हाथों को अच्छी तरह से जरूर धोएं। इस्तेमाल किए हुए पैड या टैपॉन को किसी पॉलीथीन में बांधकर डस्टबिन में डालें, इनको कभी फ्लश ना करें।
इंटीमेट एरिया की सफाई: पीरियड्स के दिनों में अपने प्राइवेट एरिया को साफ पानी से धोना चाहिए। बस इन दिनों साबुन का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, क्योंकि उससे भी इंफेक्शन हो सकता है। अगर इंचिंग हो रही है तो हल्के गुनगुने पानी से वॉश करें। अगर आप इन दिनों में कोई गेम खेलती हैं या हार्ड वर्क करती हैं तो पसीना आने पर अपने इंटीमेट एरिया को अच्छी तरह धोकर सुखा लेना चाहिए।
कॉटन मेड इनरवियर: पीरियड्स के दौरान कॉटन के अच्छी क्वालिटी के इनरवियर का इस्तेमाल करें। इससे स्किन पर रेशोज नहीं होते और स्किन भी साफ और सूखी रहती है। अगर आप इन दिनों नॉनलॉन या दूसरे फ्रैब्रिक के इनरवियर पहनती हैं तो स्किन में खुजली और जलन हो सकती है। अपने इनरवियर के साफ-सफाई का ध्यान रखें। इसे गर्म पानी और एंटीसेप्टिक लिक्विड से धोएं।
अगर इन बातों का ध्यान रखेंगी तो हाइजीन संबंधी कोई प्रॉब्लम नहीं होगी।

सजेशन
शहनाज हुसैन
कॉन्सेलोजिस्ट

अधिकतर महिलाएं अपनी फेस स्किन का तो खयाल रखती हैं। लेकिन पैरों की स्किन की उतनी देखभाल नहीं करती हैं, जितनी जरूरत होती है। इससे पैरों का वह हिस्सा, जो सीधा धूप के संपर्क में रहता है, वह अलग-सा नजर आता है। इस प्रॉब्लम को दूर करने के लिए उन्हें सैलुंस में जाकर पेडिक्योर करवाना पड़ता है। लेकिन उसके बाद भी प्रॉपर केयर नहीं करने की वजह से कुछ दिन बाद पैरों की पहले वाली स्थिति वापस हो जाती है। अगर आप भी अपने पैरों की स्किन से जुड़ी ऐसी समस्याओं से परेशान हैं तो कुछ सरल उपाय अपनाकर अपने पैरों को सुंदर और नरम बनाए रख सकते हैं।

स्क्रबिंग: पैरों की त्वचा पर मौजूद गंदगी को हटाने के लिए रेग्युलर स्क्रबिंग करें। पैरों की टैनिंग हटाने के लिए टूथपेस्ट, सोडा और नींबू का पैक काफी मददगार साबित होता है।



बेकिंग सोडा और नींबू: त्वचा को एक्सफोलिएट करने में मदद करता है।
टूथपेस्ट-बेकिंग सोडा-नींबू: इस पैक को बनाने के लिए एक कांच की कटोरी में टूथपेस्ट लें। इस पेस्ट में एक चम्मच बेकिंग सोडा और आधा नींबू का रस मिलाएं। इन तीनों चीजों को अच्छी तरह से मिक्स कर लें और बड़े चम्मच संतरे के पावडर में एक

पैरों की स्किन पर लोग कम ही ध्यान देते हैं। इस वजह से वो डल, रफ हो जाती है या उस पर टैनिंग दिखने लगती है। पैरों की स्किन सॉफ्ट, क्लीन और टैनिंग फ्री नजर आए, इसके लिए आप यहां बताए जा रहे पैक्स यूज कर सकती हैं।

यूज करें होममेड पैक्स पैर दिखेंगे खूबसूरत



लगाएं। अब नींबू के छिलके से पैरों को कुछ देर स्क्रब करें। कुछ देर तक इस पेस्ट को पैरों पर लगा रहने दें और फिर पैरों को पानी से साफ कर लें। इस पैक को हफ्ते में दो बार लगाने से पूरी तरह से टैनिंग से छुटकारा पाया जा सकता है। इसके अलावा पैरों की स्क्रबिंग के लिए कॉफी और शक्कर को मिलाकर पैरों की त्वचा पर स्क्रब कर सकती हैं। इससे पैर साफ होंगे और त्वचा नरम भी रहेगी।

बेसन और दही: दही और बेसन को एक साथ अच्छे से मिलाकर पैरों पर 30 मिनट लगाए रखें और फिर पैरों को धो लें। दही पैरों को मॉयश्चराइज करेगा और बेसन टैनिंग को हटाने में असरदार साबित होगा।
संतरा और कच्चा दूध: अगर आप चाहती हैं कि पैर मुलायम नजर आए तो संतरा काफी असरदायक रहेगा। आप दो बड़े चम्मच संतरे के छिलके का पावडर ले लें और इसमें तीन चम्मच कच्चा दूध मिलाकर पेस्ट बनाएं। इस पेस्ट को आप पैरों पर अप्लाई करें। करीब तीस मिनट बाद पैरों को धो लें। संतरे में विटामिन-सी होने के साथ स्किन व्हाइटनिंग गुण होते हैं, जो त्वचा को निखारने में मदद करते हैं। अगर आपके पैरों में टैनिंग ज्यादा हो रही है तो एक बड़े चम्मच संतरे के पावडर में एक चम्मच चावल का आटा भी मिला लें। इसके साथ एक चम्मच कच्चा दूध और थोड़ा सा शक्कर मिलाएं। इस पेस्ट को पैरों पर लगा सकती हैं। सबसे पहले एक कटोरी में गर्म पानी लें। इसमें इंसो का एक पाउच डालें। अब एक चम्मच नींबू का रस मिलाएं। इसे सही से मिलाने के बाद इसमें नारियल का तेल, शैंपू की कुछ बूंदें, एक चम्मच कॉफी पावडर और दो चम्मच आटा डालकर मिक्स कर लें। इसे टैनिंग पार्ट पर लगाएं।
रेग्युलर करें केयर: क्लीन-सॉफ्ट स्किन के लिए आपके पैरों को रेग्युलर केयर की जरूरत होती है। पॉल्यूशन से आपके पैर खराब हो जाते हैं। रोजाना शाम के समय पैरों को गुनगुने पानी में अच्छे से धोएं और सुखाएं। धोने के बाद उन्हें रेग्युलर मॉयश्चराइज भी करना बिल्कुल ना भूलें।